RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
जेष्ठ–आषाढ़, विक्रम संवत् 2082 (जून –2025)
पृष्ठ–36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

आतंकियों, सरकार और सेना का नापाक रिश्ता?

BRAHMOS

AKASH AKASH AKASH

ऑपरेशन सिंदूर

निर्णायक जीत

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

दूरभाषः 0120–4545608

ई–मेलः ssm.noida@gmail.com

वैबसाइडः www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
* नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

प्रदीप भारद्वाज (अध्यक्ष)

राजीव नाईक (व्यवस्थापक)

जितेन्द्र गौतम (कोषाध्यक्ष)

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

प्रेरणा विचार

वर्ष -3, अंक - 06

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
अशोक सिन्हा

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

आधुनिक युद्ध, निर्णायक जीत-05

जब सऊदी अरब के समाचार पत्रों ने किया संघ को नमन -12

अतीत के आईने में खेती -16

नाट्यशास्त्र पर भारतीय दर्शन -20

भय बिनु प्रीत न होत गोसाईं 07
ऑपरेशन सिंदूर एक निर्णायक सैन्य अभियान....08
भारत के वैश्विक शक्ति होने का शंखनाद है ऑपरेशन सिंदूर....10
योग की वैश्विक स्वीकार्यता और प्रभाव....14
देश के लिए कुछ अपशकुन....18
संस्कारों की आधारशिला 'कुटुंब' 22
जब मैं अजरबैजान में थी 23
भक्ति और समरसता का संगम : पुरी धाम की रथ यात्रा 24
गर्मियों में होने वाली बीमारियों से बचाव एवं उपचार....25
चार धाम यात्रा 2025....26
पद्म पुरस्कार - 2025....28
जून के उत्सव मानसून का स्वागत भी करवाते हैं!....30
नेवी सेलर बना राजेश....32
भारत ने जापान को पछाड़ा, बना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था....34

विश्व शांति के लिए नष्ट हों पाकिस्तान के परमाणु हथियार

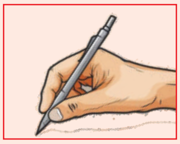

नया भारत आतंकवाद पर घर में घुसकर वार करता है। 2016 के उरी हमले के जवाब में सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 के पुलवामा हमले के बाद बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के शिविर पर हमला इसका प्रमाण हैं। पहलगाम हमले के बाद भारत की कड़ी प्रतिक्रिया नए भारत के बदलते मिजाज को दर्शाती है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि शांति का मार्ग शक्ति से होकर जाता है। दुनिया के किसी भी कोने से आतंकियों को सजा दी जाएगी।

26 नवंबर 2008 के मुंबई हमले के बाद नागरिकों पर सबसे घातक आतंकी हमला 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ, जिसमें 26 पर्यटकों की हिन्दू पहचान सुनिश्चित करने के बाद पाकिस्तान परस्त आतंकवादियों ने जघन्य हत्या कर दी। इसकी जिम्मेदारी लेने वाला आतंकी संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' 2019 से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और लश्कर-ए- तैय्यबा का मुखौटा है। जवाबी कार्रवाई में 7-8 मई की रात भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैय्यबा के 9 आतंकी ठिकानों को 23 मिनट तक हमलों में नष्ट किया। पाकिस्तान द्वारा भारतीय एयरबेस व नागरिक प्रतिष्ठानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले भारत ने विफल किए। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के 13 से अधिक एयरबेस, ड्रोन सेंटर, और रडार स्टेशनों पर हमले कर उसकी वायु रक्षा प्रणाली को पूर्णतः निष्क्रिय किया। परिणामस्वरूप पाकिस्तान संघर्ष विराम के लिए विवश हुआ।

इस सफलता में स्वनिर्मित हथियार और तकनीक की भूमिका महत्वपूर्ण रही। अमेरिकी रक्षा विशेषज्ञ कर्नल जॉन स्पेंसर के अनुसार, भारत की ब्रह्मोस मिसाइल को रोकने में चीन और पाकिस्तान असमर्थ हैं। पाकिस्तान ने बार-बार कश्मीर में हिन्दुओं का नरसंहार, मुंबई, दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, पुणे, हैदराबाद, बोधगया, अक्षरधाम मंदिर, जम्मू-कश्मीर विधानसभा, और संसद जैसे स्थानों पर आतंकी हमलों को अंजाम दिया। भारत की पूर्ववर्ती कमजोर प्रतिक्रियाओं से उसे और अधिक बढ़ावा मिला। यहां तक कि 2008 के हमले के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को सबक सिखाने के बजाय उसे आतंक से पीड़ित बता दिया।

परंतु नया भारत आतंकवाद पर घर में घुसकर वार करता है। 2016 के उरी हमले के जवाब में सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 के पुलवामा हमले के बाद बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के शिविर पर हमला इसका प्रमाण हैं। पहलगाम हमले के बाद भारत की कड़ी प्रतिक्रिया नए भारत के बदलते मिजाज को दर्शाती है। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि शांति का मार्ग शक्ति से होकर जाता है। दुनिया के किसी भी कोने से आतंकियों को सजा दी जाएगी और "हम आतंकी सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे।"

पूर्व की भांति पाकिस्तान ने इस बार भी परमाणु युद्ध की धमकी दी और अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान की मदद करने वाले देशों ने क्षेत्रीय शांति के लिए भारत को संयम बरतने की सलाह दी। परंतु भारत छेड़ने पर न तो छोड़ने और न ही किसी परमाणु ब्लैकमेलिंग के लिए तैयार था। उसके अचूक हमलों ने स्पष्ट कर दिया कि पाकिस्तान की हर गतिविधि भारत की निगाहों में है, यहाँ तक कि उसके परमाणु हथियार भी। प्रधानमंत्री जी के शब्दों में, "मानवता शान्ति और समृद्धि की तरफ बढ़े, हर भारतीय शान्ति से जी सके, विकसित भारत के सपने को पूरा कर सके, इसके लिए भारत का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी है। और आवश्यकता पड़ने पर इस शक्ति का इस्तेमाल भी जरूरी है"।

ऑस्ट्रिया के रक्षा विशेषज्ञ टॉम कूपर के अनुसार, पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार संभालने की क्षमता नहीं है, जो भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता है। अतः अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पाकिस्तान के परमाणु हथियार नष्ट करने हेतु दबाव बनाना चाहिए। अन्यथा भारत को स्वयं यह कदम उठाना चाहिए। पाकिस्तान का निर्माण ही संकीर्ण मजहबी कट्टरता पर हुआ है, जिससे सुधरने की उम्मीद व्यर्थ है। जाहिर है कि तुर्किए और अजरबैजान का पाकिस्तान को बढ़-चढ़कर सहयोग मिला। प्रतिक्रिया स्वरूप तुर्किए तथा अजरबैजान के साथ समझौता ज्ञापन रद्द करने और व्यापारिक रिश्ते खत्म करने की शुरुआत हो गई है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे IMF, पाकिस्तान को आर्थिक मदद देकर उसके आतंकी ढांचे को मजबूत करती हैं। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने पश्चिमी देशों पर भारत-चीन तनाव बढ़ाने का आरोप लगाया है। जरूरत है उन देशों और संगठनों से सतर्क रहने की, जो पाकिस्तान को भारत की प्रगति रोकने के औजार के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं। आज आवश्यकता है आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की जो विश्व शांति हेतु पाकिस्तान के परमाणु हथियारों को समाप्त करने में निर्णायक भूमिका निभा सके। ■

आधुनिक युद्ध, निर्णायक जीत

अतुल शर्मा
रक्षा और विदेशी मामलों के जानकार

भारत ने ऑपरेशन सिंदूर को पूरी तरह से खत्म घोषित नहीं किया है। अभी जो मौजूद है वह ऑपरेशन में एक संवेदनशील ठहराव है - कुछ लोग इसे युद्ध विराम कह सकते हैं, लेकिन सैन्य विशेषज्ञों ने जानबूझकर उस शब्द से परहेज किया है। युद्ध के दृष्टिकोण से, यह केवल विराम नहीं है; यह एक दुर्लभ और स्पष्ट सैन्य जीत के बाद एक रणनीतिक पकड़ है।

सिर्फ चार दिनों की कैलिब्रेटेड सैन्य कार्रवाई के बाद, भारत ने एक बड़ी जीत हासिल की। ऑपरेशन सिंदूर ने अपने रणनीतिक उद्देश्यों को पूरा किया और उससे आगे निकल गया- आतंक की बुनियादी ढांचे को नष्ट करना, सैन्य श्रेष्ठता का प्रदर्शन करना, और एक नए राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धांत का अनावरण करना। यह प्रतीकात्मक बल नहीं था। यह निर्णायक शक्ति थी, जिसे स्पष्ट रूप से लागू किया गया था।

भारत पर हमला किया गया। 22 अप्रैल, 2025 को, 26 भारतीय नागरिकों, ज्यादातर हिंदू पर्यटकों, को जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में मार दिया गया लेकिन पिछले हमलों के विपरीत, इस बार भारत ने इंतजार नहीं किया। उसने अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता की अपील नहीं की या कोई कूटनीतिक आपत्ति जारी नहीं की। उसने युद्धक विमान उतारे।

7 मई को भारत ने ऑपरेशन सिंदूर की शुरुआत की, जो एक तेज और सटीक सैन्य अभियान था। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के अंदर नौ आतंकी केन्द्रों को निशाना बनाया, जिसमें जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के मुख्यालय और संचालन केंद्र शामिल थे। संदेश स्पष्ट था – पाकिस्तानी धरती से किए गए आतंकवादी हमलों को अब युद्ध के कृत्यों के रूप में माना जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए सिद्धांत को स्पष्ट किया- 'भारत किसी भी परमाणु ब्लैकमेल को बर्दाश्त नहीं करेगा। भारत परमाणु ब्लैकमेल की आड़ में विकसित हो रहे आतंकवादी ठिकानों पर सटीक और निर्णायक हमला करेगा।' जवाबी कार्रवाई से कहीं अधिक, यह एक रणनीतिक सिद्धांत का अनावरण था। जैसा कि मोदी ने कहा, 'आतंक और बातचीत एक साथ नहीं चल सकते। पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते।'

ऑपरेशन सिंदूर को जानबूझकर चरणों में अंजाम दिया गया-

♦ 7 मई को पाकिस्तानी क्षेत्र में नौ सटीक हमले किए गए। लक्ष्यों में बहावलपुर, मुरीदके, मुजफ्फराबाद और अन्य जगहों पर प्रमुख आतंकवादी प्रशिक्षण शिविर और रसद केंद्र शामिल थे।

♦ 8 मई को पाकिस्तान ने भारत के पश्चिमी राज्यों में ड्रोन के एक बड़े झुंड के साथ जवाबी कार्रवाई की। भारत के बहुस्तरीय वायु रक्षा नेटवर्क जिसे घरेलू स्तर पर बनाया गया है और जिसे इजरायल और रूसी प्रणालियों द्वारा बनाया गया है – ने उनमें से लगभग सभी को बेअसर कर दिया।

♦ 9 मई को भारत ने नौ पाकिस्तानी सैन्य एयरबेस और यूएवी समन्वय केंद्रों पर

अतिरिक्त हमले किए।

♦ 10 मई को गोलीबारी में अस्थायी रोक लगाई गई। भारत ने इसे युद्ध विराम नहीं कहा। भारतीय सेना ने इसे 'गोलीबारी का विराम' कहा। एक अर्थपूर्ण लेकिन जानबूझकर चुना गया विकल्प जिसने स्थिति पर उसके रणनीतिक नियंत्रण को मजबूत किया। इन तमाम चुनौतियों में इसरो या भारत के दूसरे संस्थानों द्वारा विकसित उपग्रहों का जिस तरह इस्तेमाल किया गया वो युद्ध के इतिहास में एक शोध का विषय है। इसरो उपग्रहों के साथ, भारतीय सेना को वास्तविक समय की खुफिया जानकारी, सटीक हमले और त्रुटिहीन समन्वय मिला।

कार्टोसैट सीरीज : बाज से भी तेज आंखें : ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, इसरो के कार्टोसैट-3 ने 0.25 मीटर रिजॉल्यूशन के साथ, नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार आतंकी शिविरों की उच्च-रिजॉल्यूशन वाली तस्वीरें HD में प्रदान कीं। लक्ष्यों को चिन्हित किया गया। हमलों की योजना बनाई गई। एक भी पिक्सेल नहीं छूटा। जीसैट-7 और 7ए - मिलिट्री व्हिस्पर नेटवर्क एक उच्च-दांव वाले ऑपरेशन में, संचार जीवन या मृत्यु का सवाल है।

जीसैट-7/7ए ने भारतीय सशस्त्र बलों और खुफिया एजेंसियों के बीच सुरक्षित, एन्क्रिप्टेड संचार सुनिश्चित किया - यहाँ तक कि विवादित क्षेत्रों में भी।

इन तीन दिन के ऑपरेशन ने बहुत से विशेषज्ञों को दुबारा सोचने पर मजबूर किया कि संयमित और संशोधित तरीके से किया गया प्रहार सिर्फ सामरिक सफलता ही नहीं बहुत से सैद्धांतिक मुद्दों का निष्पादन भी कर सकता है। यह केवल सामरिक सफलता नहीं थी। यह लाइव फायर के तहत सैद्धांतिक निष्पादन था।

इस प्रकरण ने रणनीतिक प्रभाव हासिल किए -

1. **एक नई लाल रेखा खींची गई और उसे लागू किया गया :** पाकिस्तानी धरती से होने वाले आतंकी हमलों का अब सैन्य बल से सामना किया जाएगा। यह कोई धमकी नहीं है। यह एक मिसाल है।

2. **सैन्य श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया:** भारत ने पाकिस्तान में किसी भी लक्ष्य पर हमला करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। आतंकी स्थल, ड्रोन समन्वय केंद्र, यहां तक कि एयरबेस भी। इस बीच, पाकिस्तान भारत के अंदर एक भी सुरक्षित क्षेत्र में घुसने में असमर्थ था। यह बराबरी नहीं है। यह बहुत बड़ी श्रेष्ठता है। और इसी तरह वास्तविक प्रतिरोध स्थापित होता है।

3. **प्रतिरोध बहाल किया गया :** भारत ने जोरदार तरीके से जवाबी कार्रवाई की, लेकिन पूर्ण युद्ध से पहले ही रुक भी गया। नियंत्रित गति ने एक स्पष्ट संकेत दिया। भारत जवाब देना, और गति को नियंत्रित करना भी जानता है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने मात्र 25 मिनट में पाकिस्तान में 9 आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया और 100 से अधिक आतंकवादियों को मार गिराया।

4. **भारत ने पहली बार रणनीतिक स्वतंत्रता का दावा किया :** भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता की मांग किए बिना इस संकट को संभाला। भारत ने स्वदेशी संशाधनों का उपयोग करते हुए अपनी शर्तों पर सिद्धांत लागू किया।

ऑपरेशन सिंदूर कब्जे या शासन परिवर्तन के बारे में नहीं था। यह विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया गया सीमित युद्ध था। आलोचक जो तर्क देते हैं कि भारत को और आगे जाना चाहिए था, वे इस मुद्दे को समझने से चूक जाते हैं। रणनीतिक सफलता विनाश के पैमाने के बारे में नहीं है यह वांछित राजनीतिक प्रभाव प्राप्त करने के बारे में है। भारत प्रतिशोध के लिए नहीं बल्कि प्रतिरोध के लिए लड़ रहा था। भारत का संयम कमजोरी नहीं है यह परिपक्वता है। हमने लागत लगाई, सीमाओं को फिर से परिभाषित किया, और दक्षिण एशिया में विस्तार की मंशा रखने वाले तमाम देशों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा। भारत ने केवल हमले का जवाब नहीं दिया, उसने रणनीतिक समीकरण को बदल दिया।

ऐसे युग में, जहाँ कई आधुनिक युद्ध खुलेआम कब्जे या राजनीतिक उलझन में बदल जाते हैं, ऑपरेशन सिंदूर अलग नजर आता है। यह अनुशासित सैन्य रणनीति का प्रदर्शन था। स्पष्ट लक्ष्य, और उसकी प्राप्ति । भारत ने एक झटका झेला, अपने उद्देश्य को परिभाषित किया, और उसे हासिल किया। सब कुछ एक सीमित समय सीमा के भीतर। ऑपरेशन सिंदूर में बल का उपयोग जबरदस्त परन्तु नियंत्रित था। सटीक, निर्णायक और बिना किसी हिचकिचाहट के। आधुनिक युद्धों में इस तरह की स्पष्टता दुर्लभ ही आती है । 'हमेशा के लिए युद्ध' और रणनीतिक दिशा के बिना हिंसा के द्वारा परिभाषित युग में, सिंदूर अलग नजर आता है। यह स्पष्ट रूप से परिभाषित लक्ष्यों, मेल खाने वाले तरीकों और साधनों और एक ऐसे देश के साथ सीमित युद्ध का एक मॉडल पेश करता है जिसने कभी पहल नहीं छेड़ी। 2008 के भारत ने हमलों को झेला और इंतजार किया। यह भारत तुरंत, सटीक और स्पष्टता के साथ जवाबी हमला करता है। मोदी का सिद्धांत, भारत का बढ़ता घरेलू रक्षा उद्योग और उसके सशस्त्र बलों की व्यावसायिकता सभी एक ऐसे देश का संकेत देते हैं जो अब अंतिम युद्ध की तैयारी नहीं कर रहा है, यह अगले अभियान की तैयारी कर रहा है।

ऑपरेशन का स्थगन ऑपरेशन सिंदूर का अंत नहीं है। यह एक विराम है। भारत पहल करता है। अगर उसे फिर से उकसाया गया, तो वह फिर से हमला करेगा।

यह एक नया सिद्धांत है। और इसका अध्ययन सभी देशों को करना चाहिए जो देश प्रायोजित आतंकवाद के संकट का सामना कर रहे हैं।

ऑपरेशन सिंदूर एक आधुनिक युद्ध था - परमाणु युद्ध की छाया में, वैश्विक ध्यान के साथ, और एक सीमित उद्देश्य ढांचे के भीतर लड़ा गया। हर मायने में यह एक रणनीतिक सफलता थी और एक निर्णायक भारतीय जीत है। ■

भय बिनु प्रीत न होत गोसाई

प्रो. उर्विजा शर्मा
प्रोफेसर, शम्भु दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

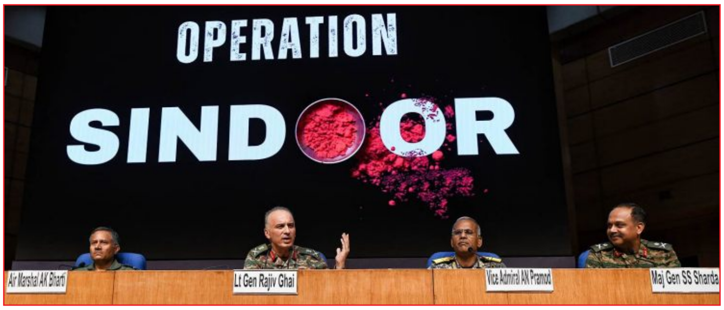

गत दिनों “ऑपरेशन सिंदूर” के सफल ऑपरेशन ने यह चरितार्थ कर दिया कि “भय बिनु प्रीत न होत गोसाईं।” ऑपरेशन सिंदूर भारत के आत्मगौरव, आत्मविश्वास, शक्ति व सामर्थ्य का परिचय है। आतंक के पर्याय पाकिस्तान ने पुनः कुचेष्ठा करके भारत के कश्मीर स्थित पहलगाम पर आतंकी हमला करवाकर कहीं न कहीं भारत की आत्मचेतना पर घात कर दिया है। पूरा राष्ट्र इस घटना से इस कारण भी विहवल तथा स्तब्ध हो गया क्योंकि केवल हिन्दुओं को निशाना बनाया गया। इतिहास साक्षी है कि हिन्दू सदैव से ही आक्रांताओं के निशाने पर अपनी सर्वधर्म सद्भाव तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की सहिष्णु पद्धति के कारण रहे हैं। किंतु कहते हैं “अति सर्वदा वर्जयेत”। इसी कारण इस घटना के बाद भारत ने अपना धैर्य खो दिया। सरकार के साथ-साथ आमजनमानस को कहीं न कहीं सीधी चुनौती दी गयी। परिणाम स्वरूप भारत ने ‘ऑपरेशन सिंदूर’ के माध्यम से न केवल आतंकवादियों वरन् आतंकवाद के पोषक पाकिस्तान तथा संपूर्ण विश्व को यह संदेश दे दिया कि आतंकवाद को लेकर भारत की ‘जीरो टॉलरेंस’ की नीति है। पाकिस्तान परस्त आतंकवाद कहीं न कहीं इस्लामिक जिहाद की अवधारणा पर आश्रित है।

यद्यपि पूर्व में भी समय-समय पर भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक के माध्यम से न केवल पाकिस्तान वरन् संपूर्ण विश्व को यह संदेश दिया कि अब भारत नरम रुख अपनाने वाला नहीं है। भारत ने सैन्य कार्यवाही करने से पूर्व अनेक राजनीतिक, कूटनीतिक कार्यवाही की। ‘सिन्धु जल समझौता’ के निलंबन, व्यापारिक गतिविधियों को स्थगित करना, सामाजिक रूप से पाकिस्तान से प्रत्येक प्रकार के संबंधों का विच्छेद, IMF (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) तथा यूएनओ में निरंतर पाकिस्तान का विरोध भी इसी प्रक्रिया की एक शृंखला ही है। जिस प्रकार से पहले भारत ने आतंकियों के 9 ठिकानों को ध्वस्त किया तथा तदुपरांत पाकिस्तान द्वारा जबावी कार्यवाही करने पर उनके 11 एयरबेस सहित, विमान, मिसाइलों को ध्वस्त किया वह भविष्य के भारत की सही कहानी दिखा देते हैं। भारत के विरुद्ध असहाय होने पर पाकिस्तान ने ‘सोशल मीडिया’ के माध्यम से अनेकों भ्रम फैलाने का प्रयास कर स्वयं का ही मखौल बनवाया। इस संदर्भ में पाकिस्तान के विदेश मंत्री तथा रक्षामंत्री के हास्यास्पद बयान भी समस्त विश्व ने देखे तथा मजाक बनाया। क्योंकि तथ्यहीन, भ्रामक बातें बहुत देर तक टिकना संभव नहीं है। लेकिन इससे यह तथ्य भी प्रकाश में आया कि आगामी समय विश्व में बनाये अनेक ‘नैरेटिव’ के ध्वंस का भी है। इसके विपरीत भारत सरकार तथा भारतीय सैन्य बल का रवैया प्रोफेशनल था। कहा भी जाता है कि ‘सत्य कभी परास्त नहीं होता।’ ध्यातव्य है कि अब भ्रामक, मिथ्यापूर्ण व कपट करके भी पाकिस्तान जीत नहीं सकता। इस कारण छलकपट करके कायरतापूर्ण हरकतें करने को विवश है। पाकिस्तान की प्रत्येक कार्यवाही इस कारण भी ध्वस्त हो रही है क्योंकि वर्तमान सरकार किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगी। इसमें वर्तमान सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति, राष्ट्र प्रथम का भाव, होना भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस प्रकार से भारतीय सेना ने शौर्य, पराक्रम का प्रदर्शन करके स्वनिर्मित अस्त्रों के साथ इस संकट का सामना किया वह सराहनीय है। विश्वस्तर पर भी तुर्की एवं अजरबैजान के अलावा प्रत्येक देश ने पाकिस्तान के इस कृत्य की निंदा की। यद्यपि चीन तथा अमेरिका ने अपने व्यापारिक हितों के कारण भारत को असहज किया, किंतु प्रधानमंत्री मोदी द्वारा ‘राष्ट्र के नाम संदेश’ ने पूरे विश्व को भी संदेश दे दिया कि भारत अब (न्यू नॉमर्ल) पर चलकर किसी भी दबाव में नहीं आयेगा। भारत अपने आत्मबल से प्रत्येक परिस्थिति का सामना करेगा तथा आततायियों पर तीव्र प्रहार करेगा।

रामचरितमानस की पंक्तियां – “विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।।” का उद्धरण सैन्य प्रमुख ने संभवतः इसी कारण दिया। गर्व का विषय यह है कि कुछेक व्यक्तियों के वक्तव्यों को छोड़कर भारत ने अपनी एकजुटता पूरे विश्व के समक्ष प्रदर्शित कर दी है। आर्थिक रूप से भारत विश्व की चतुर्थ अर्थव्यवस्था बन चुका है। ऐसी परिस्थिति में भारत का मारक प्रहार विश्व को एक संदेश भी है। कहा भी जाता है “समरथ को नहीं दोष गोसाईं।” संभवतः अब समय आ गया है भारत अपनी शर्तों पर अपनी राजनीति दिशा निर्धारित करके विदेश नीति बनाये। सही अर्थों में विश्वगुरु बनने का समय आ चुका है। भारत-राष्ट्र को विनम्र नमन। ■

ऑपरेशन सिंदूर
एक निर्णायक सैन्य अभियान

डॉ. (कर्नल) बृज मोहन

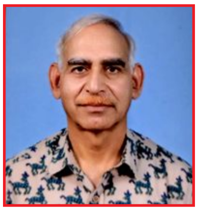

22 अप्रैल 2025 को, 26 भारतीय नागरिकों सहित एक नेपाली नागरिक, जो जम्मू-कश्मीर में पर्यटक के रूप में घूमने आए थे, को आतंकवादियों के एक समूह ने दिन-दहाड़े गोली मार दी। यह हमला उनके परिवारों और बच्चों के सामने हुआ, जिससे पूरा देश हिल गया और कश्मीर से कन्याकुमारी तक आक्रोश की लहर दौड़ गई।

इस राष्ट्रव्यापी शोक और गुस्से के जवाब में, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस जघन्य कृत्य का बदला लेने की प्रतिज्ञा ली। एक सर्वदलीय बैठक बुलाई गई, जिसमें सरकार ने आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों, विशेष रूप से पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक सैन्य कार्रवाई करने का संकल्प लिया।

7 मई 2025 को तड़के लगभग 1.30 बजे, भारतीय सेना और वायुसेना ने संयुक्त सैन्य कार्रवाई शुरू की, जिसका लक्ष्य पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) और पाकिस्तान में स्थित आतंकी शिविरों को नष्ट करना था। "ऑपरेशन सिंदूर" नाम इसलिए चुना गया क्योंकि यह उन पत्नियों के गहरे शोक और दुःख का प्रतीक था, जिन्होंने अपने पतियों की निर्मम हत्या अपनी आंखों के सामने देखी। भारतीय परंपरा में सिंदूर एक महिला के वैवाहिक जीवन का पवित्र प्रतीक होता है। इस नाम के माध्यम से, इस अभियान ने उन महिलाओं की पीड़ा और क्षति को श्रद्धांजलि दी, जिनके वैवाहिक संबंध आतंकवाद के कारण क्रूरता से छीन लिए गए। पहले ही हमले में, नौ आतंकी शिविरों और प्रमुख आतंकी संगठनों के मुख्यालयों को सटीक मिसाइल हमलों से नष्ट कर दिया गया।

पृष्ठभूमि : यह आतंकवादी हमला उस समय हुआ जब जम्मू-कश्मीर में धीरे-धीरे शांति लौट रही थी। अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण और सफल विधानसभा चुनावों के बाद सामान्य स्थिति बहाल हो गई थी, जिससे पर्यटन में भारी वृद्धि हो रही थी।

आतंकवादियों ने पर्यटकों को उनके धर्म के आधार पर निशाना बनाया। एक विशेष धार्मिक समूह के पुरुषों को उनके परिवारों के सामने गोली मार दी गई, जिनमें कई नवविवाहित जोड़े थे। यह बर्बर कृत्य तेजी से राष्ट्रीय सुर्खियों में आया और पूरे देश में आक्रोश फैल गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, 4–5 आतंकवादियों के इस समूह में से कई पाकिस्तान से थे। उन्होंने जानबूझकर कुछ जीवित बचे लोगों से कहा, "जाओ, अपने प्रधानमंत्री मोदी से कहो।" इसे भारत की संप्रभुता और सम्मान के खिलाफ सीधी चुनौती माना गया, जिसे सरकार ने अत्यंत गंभीरता से लिया।

उद्देश्य और लक्ष्य : ऑपरेशन सिंदूर का मुख्य उद्देश्य आतंकवादी शिविरों और उनके ढांचे को समाप्त करना और आतंकवाद के ज्ञात समर्थक पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराना था। इसके लिए एक बहु-आयामी रणनीति अपनाई गई जिसमें शामिल थे।

कूटनीतिक उपाय : आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाना।

आर्थिक कार्रवाई : पाकिस्तान के साथ सभी व्यापारिक संबंध निलंबित करना और सिंधु जल संधि (IWT) को रोकना।

मनोवैज्ञानिक युद्ध : यह संदेश देना कि कोई भी आतंकवादी कहीं भी सुरक्षित नहीं है।

IWT का निलंबन और पाकिस्तान की भूमि के अंदर तक लक्षित हमलों ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत अब निर्णायक रूप से पलटवार करने से नहीं चूकेगा।

सैन्य कार्रवाई और उपलब्धियां : ऑपरेशन सिंदूर के तहत 7 मई 2025 को पहले दिन किए गए हमलों में, भारतीय सशस्त्र बलों ने नौ आतंकी ठिकानों और उनके मुख्यालयों को सफलतापूर्वक निशाना बनाकर नष्ट कर दिया। ये हमले पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) से लेकर पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र तक फैले आतंकवादी ढांचे को ध्वस्त करने में सफल रहे, जिसमें 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए।

इस सैन्य कार्रवाई ने राजनीतिक इच्छाशक्ति और सैन्य ताकत दोनों को प्रदर्शित किया। पहले चरण के हमलों में जिन स्थानों को निशाना बनाया गया, उनमें शामिल थे- सवैनाल, गुलपुर, भीमर, सर्जल, मुजफ्फराबाद, कोटली, सियालकोट, मुरिदके और बहावलपुर।

मारे गए आतंकियों में संयुक्त राष्ट्र द्वारा सूचीबद्ध पाँच मोस्ट वांटेड आतंकी शामिल थे। इसके अतिरिक्त, लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे प्रमुख आतंकी संगठनों के मुख्यालय भी इस अभियान में पूरी तरह से नष्ट कर दिए गए।

पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई : भारत द्वारा सिंधु जल संधि को निलंबित करने और पाकिस्तान की भूमि के अंदर आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करने के दोहरे प्रभाव में पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई की।

7 मई 2025 को तड़के लगभग 1.30 बजे, भारतीय थलसेना और वायुसेना ने संयुक्त सैन्य कार्रवाई शुरू की, जिसका लक्ष्य पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (PoK) और पाकिस्तान में स्थित आतंकी शिविरों को नष्ट करना था। "ऑपरेशन सिंदूर" नाम इसलिए चुना गया क्योंकि यह उन पत्नियों के गहरे शोक और दुःख का प्रतीक था, जिन्होंने अपने पतियों की निर्मम हत्या अपनी आंखों के सामने देखी।

पाकिस्तान ने भारत के नागरिक क्षेत्रों, हवाई अड्डों और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाकर ड्रोन और विमानों से हमले किए। हालांकि, भारत की वायु रक्षा प्रणालियों S-400 और बराक-8 ने इन ड्रोन और मिसाइलों को प्रभावी रूप से निष्क्रिय कर दिया।

जारी अभियान : 9/10 मई 2025 : जहां भारत की सैन्य कार्रवाई केवल आतंकी ढांचे तक सीमित रही, वहीं पाकिस्तान ने भारतीय नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाकर संघर्ष को बढ़ा दिया। इसके जवाब में, भारतीय वायुसेना ने 9 और 10 मई 2025 को कई पाकिस्तानी वायुसेना ठिकानों पर उच्च-सटीकता वाली मिसाइलों से हमले किए।

10 मई की सुबह किए गए छापामार हमलों ने पाकिस्तान की सरकार और सैन्य नेतृत्व में खलबली मचा दी। रिपोर्टों के अनुसार, शीर्ष सैन्य अधिकारी और नेता छिपने लगे और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से संघर्ष विराम की अपील करने लगे।

7. **हथियार और शस्त्रागार :** यह अभियान स्वदेशी भारतीय हथियारों के बड़े पैमाने पर उपयोग का पहला उदाहरण था, जिनमें शामिल थे-

- आकाश सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें।
- ब्रह्मोस क्रूज़ मिसाइलें।
- भारतीय-निर्मित ड्रोन

इनके अतिरिक्त, राफेल लड़ाकू विमान और रूसी-निर्मित S-400 वायु रक्षा प्रणाली ने निर्णायक भूमिका निभाई।

दूसरी ओर, पाकिस्तान ने तुर्की-निर्मित ड्रोन और चीनी PL-15 मिसाइलों का उपयोग किया।

10 मई 2025 को 15.35 बजे, पाकिस्तान के सैन्य अभियानों के महानिदेशक (DGMO) ने अपने भारतीय समकक्ष से संपर्क किया और संघर्षविराम का अनुरोध किया।

भारत ने, उस समय तक अपने प्रमुख लक्ष्यों की प्राप्ति कर लेने के कारण अभियान को अस्थायी रूप से स्थगित करने पर सहमति व्यक्त की। लेकिन एक कड़ी चेतावनी जारी की-भविष्य में कोई भी दुस्साहस युद्ध की कार्यवाही माना जाएगा और उसका जवाब कहीं अधिक शक्तिशाली तरीके से दिया जाएगा। ■

भारत के वैश्विक शक्ति होने का शंखनाद है ऑपरेशन सिंदूर

एन.सी. बिपिन्द्र
रक्षा एवं सामरिक मामलों के विश्लेषक, नई दिल्ली

भारत द्वारा पहलगाम आतंकी हमले के पीड़ितों का बदला लेने के लिए पाकिस्तान और उसके आतंकी अड्डों पर की गई सैन्य कार्रवाई 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद, वैश्विक रणनीतिक मामलों के विशेषज्ञों, सैन्य विश्लेषकों और अंतरराष्ट्रीय मीडिया का भारी बहुमत यह मानता है कि नई दिल्ली ने इस्लामाबाद पर निर्णायक जीत हासिल की है।

जब भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों पर सटीक सैन्य हमले किए, तो शुरुआती वैश्विक मीडिया और थिंक-टैंक्स ने बिना पुष्टि किए पाकिस्तान के सोशल मीडिया हैंडल की दुष्प्रचार पर आधारित दावों को आधार बनाकर भारत की हार घोषित कर दी। इन दावों का कोई आधार नहीं था, क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर ने 7 मई से 10 मई 2025 तक चार दिनों तक अपनी प्रक्रिया जारी रखी। अब, ऑपरेशन के बाद की समीक्षा ने भारतीय सैन्य बयानों पर विश्वास जताया है कि भारत ने वास्तव में सटीक ठिकानों को निशाना बनाया, और इसके प्रमाण भारतीय सरकार द्वारा प्रस्तुत सबूतों में स्पष्ट थे।

वहीं पाकिस्तान अपने दावों के समर्थन में कोई तकनीकी डेटा, सैटेलाइट इमेज या अन्य साक्ष्य देने में बुरी तरह विफल रहा है। न्यूयॉर्क टाइम्स को भी 14 मई 2025 को प्रकाशित एक लेख में भारतीय सैन्य कार्रवाई की श्रेष्ठता को अनिच्छा से स्वीकार करना पड़ा।

अनेक अंतरराष्ट्रीय मीडिया मंचों ने सैन्य विशेषज्ञों और विश्लेषकों के साक्षात्कार दिखाए हैं, जो भारतीय दावों का समर्थन करते हैं कि भारत ने सटीक ठिकानों को निशाना बनाया, जिससे पाकिस्तानियों के बीच 100 से अधिक हताहत हुए। उन्होंने भारतीय सरकार और अन्य अंतरराष्ट्रीय स्पेस टेक्नोलॉजी कंपनियों द्वारा प्रस्तुत सैटेलाइट इमेजेज को दिखाया है, जिससे ऑपरेशन सिंदूर पर उनकी रिपोर्टिंग की पुष्टि होती है।

भारत ने पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले क्षेत्रों में नौ आतंकी अड्डों के साथ-साथ 11 सैन्य ढांचों जैसे एयरबेस, रनवे, हैंगर, गोला-बारूद डंप और वायु रक्षा प्रणाली को भी निशाना बनाया। पाकिस्तान की चीनी सैन्य उपकरणों पर भारी निर्भरता एक आपदा साबित हुई है। पाकिस्तान पांच भारतीय लड़ाकू विमानों को मार गिराने, आदमपुर एयरबेस पर बमबारी करने या भारतीय सैन्य परिसंपत्तियों जैसे एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम को निशाना बनाने के अपने किसी भी दावे का समर्थन नहीं कर सका। इस कारण अंतरराष्ट्रीय समुदाय और मीडिया ने अपनी प्रारंभिक गलत रिपोर्टिंग को वापस ले लिया है, जिनका आधार अज्ञात सूत्र और अपुष्ट सोशल मीडिया दावे थे।

युद्ध के कोहरे में खबरें पहली शिकार बनती हैं। सूचनाओं का विखंडन एक रणनीतिक जीत बन जाती है। असत्य एक सामूहिक विनाश का हथियार बन जाता है। समाचार स्वयं युद्ध का साधन बन जाते हैं। 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में 26 निर्दोष नागरिकों की निर्मम हत्या ने भारत को गहरे भावनात्मक आघात में डाल दिया, जिसे मीडिया ने एक शोकाकुल और संवेदनशील राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया। कोई सांत्वना के शब्द नहीं थे, कोई सहानुभूति व्यक्त करने के लिए अखबार की स्याही नहीं थी। एक अघोषित उल्लास था। कितना कठोर हो गया था वैश्विक मीडिया का स्वरूप!

जब भारत ने 7 मई 2025 को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी शिविरों पर सैन्य हमला किया, तो पश्चिमी मीडिया इस नवभारत की उभरती हुई छवि को बर्दाश्त नहीं कर सका, जो अब आतंक के लिए शून्य सहिष्णुता रखता है।

ब्रैंडन जे. वाइकेर्ट, जो स्वयं को अमेरिकी मंच नेशनल इंटरेस्ट का राष्ट्रीय सुरक्षा संपादक बताते हैं, ने 8 मई 2025 को यह दावा कर दिया कि पाकिस्तानियों ने भारत पर विजय प्राप्त कर ली है, जबकि भारतीय सैन्य अभियान को शुरू हुए अभी 24 घंटे भी नहीं हुए थे। ऑपरेशन सिंदूर की सैन्य कार्रवाई तीन और दिन चली। भारत द्वारा सैन्य

कार्रवाई रोकने के बाद भी ब्रैंडन ने अपने आकलन या दावे को संशोधित नहीं किया। यह उनके नैतिकता और विश्वसनीयता की असली परीक्षा थी।

उनका पहला लेख भारतीय मूल के हॉटमेल के संस्थापक सबीर भाटिया द्वारा ट्वीट किया गया, जो पाकिस्तान के प्रचार को बढ़ावा देने में भी अप्रतिम हैं। पाकिस्तानी दृष्टिकोण को चीनी सरकारी मीडिया जैसे ग्लोबल टाइम्स और चाइना डेली ने भी समर्थन दिया, जिसे भारतीय दूतावास बीजिंग और भारत सरकार की प्रेस सूचना ब्यूरो की फैक्ट चेक शाखाओं ने खंडित किया। चीन की चिंता वास्तविक थी। उसका पूरा हथियार निर्यात बाजार खतरे में था। और शायद यह पहली बार था कि चीनी हथियारों को भारत जैसे प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ असली युद्ध में आजमाया जा रहा था। याद रहे, छह महीने पहले तक चीन लद्दाख में भारत से आमने-सामने की स्थिति में था, परंतु कोई वास्तविक सैन्य संघर्ष नहीं हुआ था जिससे भारी हथियारों का उपयोग करना पड़े।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने पहले आतंकी ढांचों को निशाना बनाकर संघर्ष की सीढ़ी पर चढ़ाई की, फिर अपने रणनीतिक लक्ष्य को पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को समाप्त करने तक विस्तारित कर दिया। भारत ने पाकिस्तान द्वारा समर्थित, प्रशिक्षित, सुसज्जित और वित्तपोषित आतंकवादी समूहों के प्रति अपने युद्ध सिद्धांत को हमेशा के लिए बदल दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने नए भारत की आतंकवाद और उसके प्रायोजकों के प्रति नीति को स्पष्ट किया। भारत अब अपने क्षेत्र में आतंकवादी हमलों को बर्दाश्त नहीं करेगा। परमाणु युद्ध की धमकी अब भारत को आतंकियों और उनके प्रायोजकों पर कार्यवाही करने से नहीं रोक पाएगी। और भारत अब हर आतंकी हमले को युद्ध की संज्ञा देगा, अर्थात् पाकिस्तान को हर हमले की कीमत चुकानी पड़ेगी।

पाकिस्तान का परमाणु युद्ध का भय अमेरिकी नेतृत्व ने और बढ़ा दिया, जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने हस्तक्षेप के लिए कुछ 'चिंताजनक खुफिया जानकारी' होने की बात कही। मानो भारत-पाकिस्तान के बीच परमाणु युद्ध की संभावना थी। भारत ने प्रधानमंत्री मोदी और विदेश मंत्रालय के माध्यम से यह संकेत दिया कि वह अमेरिका की बातों को गंभीरता से नहीं ले रहा।

भारत ने पाकिस्तान के साथ अपनी दीर्घकालिक समस्याओं और राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखते हुए 1960 की सिंधु जल संधि को भी सैन्य कार्रवाई की समाप्ति के बाद निलंबित रखने का निर्णय लिया। यह एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि भारत लंबे समय से इस संधि को फिर से वार्ता के लिए खोलना चाहता था ताकि अपने नागरिकों को सिंधु नदी जल का लाभ मिल सके।

जब भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों पर सटीक सैन्य हमले किए, तो शुरुआती वैश्विक मीडिया और थिंक-टैंक्स ने बिना पुष्टि किए पाकिस्तान के सोशल मीडिया हैंडल की दुष्प्रचार पर आधारित दावों को आधार बनाकर भारत की हार घोषित कर दी। जबकि इन दावों का कोई आधार नहीं था।

भारत ने यह भी संकेत दिया है कि उसने ऑपरेशन सिंदूर को समाप्त नहीं किया है और वह स्थायी सतर्कता और तत्परता की स्थिति भारत ने भारत-पाकिस्तान के संयुक्त परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किए जाने की प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करते हुए, अपनी विशिष्ट वैश्विक पहचान पर बल दिया है। हालांकि, शुरुआत से ही भारत ने स्पष्ट किया था कि उसकी कार्रवाई आतंकवाद के खिलाफ है, पाकिस्तान की सेना के खिलाफ नहीं। भारत की सैन्य कार्रवाई गैर-उत्तेजक थी और उसने पाकिस्तान की सैन्य परिसंपत्तियों को केवल जवाबी कार्रवाई में निशाना बनाया, जब पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय सीमा और नियंत्रण रेखा पार की।

संकेत मिलते हैं कि अमेरिका ने अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए इस संघर्ष में हस्तक्षेप किया। अमेरिका को डर था कि यदि यह सीमित सैन्य संघर्ष बढ़कर नई दिल्ली या मुंबई तक पहुंच गया, तो भारत में उसके व्यापार और निवेश को नुकसान हो सकता है। हालांकि, भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके पास पाकिस्तान के केंद्र तक लड़ाई ले जाने की पूरी क्षमता और सैन्य शक्ति है। लेकिन यह एक अलग कहानी है।

पश्चिमी देशों और अंतरराष्ट्रीय मंचों की प्राथमिक चिंता भारत में अपने व्यापारिक हितों की थी, क्योंकि भारत उनके लिए एक विशाल बाजार है। पाकिस्तान उनके लिए किसी आर्थिक महत्व का देश नहीं है।

आतंक के खिलाफ भारत के युद्ध को मिली जबरदस्त कूटनीतिक समर्थन यह दिखाता है कि भारत अब वैश्विक शक्ति का केंद्र बन चुका है। भारत को आतंक के खिलाफ युद्ध के लिए किसी की मंजूरी की आवश्यकता नहीं थी, फिर भी अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इजराइल, और यहां तक कि सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ईरान और कतर जैसे पश्चिम एशियाई देशों ने भी भारत के आत्मरक्षा और आतंक खत्म करने के अधिकार को स्वीकार किया। यहां तक कि चीन, जो पाकिस्तान का सबसे करीबी सहयोगी है, ने भी भारत की आतंक विरोधी सैन्य कार्रवाई पर चुप्पी साधे रखी।

ऑपरेशन सिंदूर ने एक बार फिर उन पाकिस्तान समर्थकों को उजागर कर दिया है, जो पीड़ित इस मामले में भारत, और 7 अक्टूबर 2023 के हमास हमले में इजराइल को ही आक्रांता घोषित करने की आदत बना चुके हैं।

भारत ने आज दुनिया को स्पष्ट रूप से दिखा दिया है कि वह अब कोई कमजोर राष्ट्र नहीं रहा। भारत ने यह भी स्पष्ट संकेत दिया है कि वह अब अपने पश्चिमी और उत्तरी पड़ोसियों से किसी भी सैन्य चुनौती को लेने के लिए पूरी तरह से तैयार है। अब समय आ गया है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित सभी शीर्ष वैश्विक मंचों में स्थायी सदस्यता मिले। ■

जब सऊदी अरब के समाचार पत्रों ने किया संघ को नमन

नवम्बर 1998 में मेरठ प्रान्त के 'समरसता संगम' शिविर में 5,200 गांवों से 51,200 स्वयंसेवकों ने प्रतिभागिता की। अखिल भारतीय दृष्टि से यह दो रात और तीन दिनों तक चलने वाला उस समय तक सबसे बड़ा आयोजन था।

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
शोध प्रमुख, प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

सेवा के देवदूत

चरखी दादरी में रा.स्व. संघ के स्वयंसेवकों की सेवा से अभिभूत मुसलमानों ने मस्जिद में उन्हें आमंत्रित कर आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा की इस श्रृंखला में हम आ पहुंचे हैं अपने अगले पड़ाव पर। 1995 से आगे 2005 तक यह संघ यात्रा का आठवां दशक है। 17 जून 1996 को पूज्य बाला साहब देवरस ने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। इसी वर्ष नवंबर में आंध्र प्रदेश के गोदावरी जिले में भयंकर चक्रवात आया, जिसमें 8000 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और भारी संपत्ति का नुकसान हुआ। ऐसे समय में सदैव के समान स्थानीय स्वयंसेवक तत्काल राहत कार्य में जुट गए और संघ ने 'जनसंरक्षण समिति' गठित कर हजारों लोगों तक चिकित्सा, भोजन, वस्त्र एवं अन्य बुनियादी सहायता पहुंचाई। समिति ने बुरी तरह से प्रभावित 70 गाँवों को चयनित कर 10,000 से अधिक परिवारों के पुनर्वास की व्यवस्था की। इसी वर्ष हरियाणा प्रदेश के चरखी दादरी में सउदी अरेबिया तथा कजाख यात्री विमानों की आकाश में भीषण टक्कर से हुई दुर्घटना में 300 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गयी, जिनमें से अधिकांश मुस्लिम थे। दुर्घटना स्थल पर सबसे पहले पहुंचने वालों में संघ के स्वयंसेवक थे। उन्होंने मलबे में से क्षत-विक्षत शवों को निकालकर उनको लकड़ी के बक्सों में रखवाना, उन्हें ट्रक पर चढ़ाना, निश्चित जगह पर उतरवाना, मृतकों के शवों की पहचान करने में उनके परिजनों की सहायता करना, उन्हें सांत्वना देना और मुस्लिम मौलवियों के द्वारा शवों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था में सहयोग किया। इस कार्य में विहिप, बजरंग दल, भारत विकास परिषद् और आर्य समाज के स्वयंसेवकों ने भी कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया। पूरे देश में संघ के स्वयंसेवकों के इस सेवाभाव की सराहना हुई। राहत कार्यों में संघ की उल्लेखनीय भूमिका की अंतरराष्ट्रीय प्रेस, विशेष रूप से खाड़ी देशों के द्वारा भी प्रशंसा की गई। सउदी अरब के समाचार पत्र 'अल रियाद' ने टिप्पणी की, "हमारा यह भ्रम कि संघ मुस्लिम विरोधी है, बड़ी सीमा तक दूर हो गया।" ब्रिटिश पराधीनता काल में अंग्रेजों ने भारत के इतिहास को विकृत करने के उद्देश्य से षड्यंत्रपूर्वक 'आर्य आक्रमण' का मनगढ़ंत सिद्धांत आरोपित किया था। अपने स्थापना के समय से ही भारत की मौलिकता, भारत के स्वभाव और भारत के स्वत्व के प्रति संघ का बौद्धिक चिंतन रहा है। 1996 में संघ की प्रेरणा से आर्यों के मूल स्थान और उनकी संस्कृति के उद्भव से जुड़ी सरस्वती नदी को लेकर संघ के स्वयंसेवक, संस्कार भारती के संस्थापक सदस्य एवं प्रसिद्ध पुरातत्वविद् डॉ. वी.एस. वाकणकर जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय 16 विद्वानों के दल ने शिवालक पर्वतमाला से लेकर श्री सोमनाथ धाम तक (4000 किमी) सर्वेक्षण किया और सरस्वती नदी के वर्तमान में भी भूमि के नीचे प्रवाहित होने के प्रमाण और पुरातात्विक तथ्य जुटाए। यह तथ्य सरस्वती नदी के आस-पास आर्यों की उन्नत सभ्यता को प्रमाणित करने वाले हैं।

1997 में पंजाब के लुधियाना में एक दिवसीय स्वर्ण जयंती संघ समागम में 21,000 स्वयंसेवक एकत्र हुए। 9 फरवरी 1997 को उज्जैन में विराट सम्मेलन में 35,000 स्वयंसेवकों का भव्य पथ संचलन हुआ।

इस समय तक संघ का कार्य विदेशों में रह

रहे प्रवासी हिन्दुओं तक विस्तृत हो गया था और समय-समय पर वरिष्ठ अधिकारी विभिन्न देशों में प्रवास करते थे। 1997 में तत्कालीन सरसंघचालक रज्जू भय्या ने 'हिन्दू काउंसिल ऑफ केन्या' के निमंत्रण पर 10 से 17 जनवरी तक केन्या का दौरा किया। 1998 में भी वह जापान के प्रवास पर गये।

25 दिसम्बर 1998 को मुंबई में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का भव्य स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित हुआ। नवम्बर 1998 में मेरठ प्रान्त के 'समरसता संगम' शिविर में 5,200 गांवों से 51,200 स्वयंसेवकों ने प्रतिभागिता की। इस महाशिविर हेतु स्वयंसेवकों ने मेरठ के गंगानगर में तम्बुओं का एक उपनगर बसा दिया था।

21 सितम्बर 1997 को विशाखापट्टनम के एक तेल शोधन संयंत्र में भीषण एवं विनाशकारी अग्निकांड में 50 से अधिक व्यक्ति जलकर स्वाहा हो गए। इस अग्निकांड के धमाके को सुनकर 200 स्थानीय स्वयंसेवक तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। विजयवाड़ा से प्रकाशित दैनिक इंडियन एक्सप्रेस ने अगले दिन छापा, 'जब एच.पी.सी.एल की रिफानरी की संचय टंकी में आग भड़क उठी और 56 व्यक्ति आग की लपटों से जलकर राख हो गए तो ध्वस्त ढाँचे के मलबे से शवों को निकालने का कार्य प्राधिकारियों ने नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुशासित कार्यकर्ताओं ने किया।' आपात स्थिति में परस्पर समन्वय रखते हुए अनुशासित पद्धति से कार्य करने वाले स्वयंसेवकों की सभी ने प्रशंसा की। ऐसी ही एक हृदय विदारक घटना में इसी वर्ष जून माह में चेन्नई नगर की एक मलिन बस्ती की लगभग 500 झोपड़ियां सूर्य की प्रचंड उष्णता से तप्त होकर झुलस गयीं जिससे कुछ व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। सैंकड़ों निर्धन बेघर हो गये, स्वयंसेवकों ने इन बंधुओं के पुनर्वास की व्यवस्था की। इसी प्रकार चेन्नई के औद्योगिक उपनगर कन्निंअम्मपेटै में एक पल्ली कई दिनों कमर तक पानी में डूबी रही, स्वयंसेवक असहाय गांव वालों के लिए सड़ रहे पानी को चीरते हुए राहत सामग्री पहुंचाते थे।

स्वाधीनता के बाद से ही पूर्वोत्तर भारत की स्थिति ईसाई मिशनरियों द्वारा समर्थित उग्रवादी गतिविधियों के चलते निरंतर बिगड़ती जा रही थी। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र तत्कालीन सरकारों द्वारा उपेक्षा का शिकार था किन्तु संघ के अनेक स्वयंसेवक इस क्षेत्र में रह रहे अपने बन्धु-बांधवों के साथ खड़े थे। तब स्थिति इतनी खराब थी कि संघ के अनेक कार्यकर्ता सादे वेश में रहकर अपना कार्य करते थे। उस क्षेत्र को भारत से अलग किये जाने का षड्यंत्र किया जा रहा था। वहां के आम-जनमानस को भारत की मूल संस्कृति से विलग कर उन्हें मुख्य धारा के विरुद्ध उकसाया जा रहा था। संघ के प्रचारक एवं अनेक कार्यकर्ता ऐसी विपरीत परिस्थितियों में अपनी जान हथेली पर रखकर जन-जागरुकता अभियान में जुटे थे। अनेक स्वयंसेवकों ने वहां अपना बलिदान दिया। ऐसी ही एक घटना 6 अगस्त 1999 को घटी जब संघ के चार पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं - दिनेंद्र नाथ डे, श्यामल कांति सेन, शुभंकर चक्रवर्ती तथा सुधायम दत्ता को त्रिपुरा में एन.एल.एफ.टी. उग्रवादियों ने 2 करोड़ रुपए की फिरौती मांगते हुए अगवा कर लिया और बाद में चारों प्रचारकों की हत्या कर दी। लेकिन इसके बावजूद उग्रवादी, स्वयंसेवकों के संकल्प को डिगा नहीं सके। इस क्षेत्र में संघ कार्य निर्बाध गति से चलता रहा।

चेन्नई के औद्योगिक उपनगर कन्निंअम्मपेटै में एक पल्ली कई दिनों कमर तक पानी में डूबी रही, स्वयंसेवक सड़ रहे पानी को चीरते हुए असहाय गांव वालों के लिए राहत सामग्री पहुंचाते थे।

वर्ष 1999 में 28 अक्टूबर को उड़ीसा के तट पर सदी का सबसे विनाशकारी चक्रवात आया, जिसमें 10000 लोगों की जान गई तथा 1800 करोड़ रुपए की संपत्ति का नुकसान हुआ। संघ ने राहत एवं पुनर्वास गतिविधियों में 'उत्कल विपन्न सहायता समिति' के बैनर तले अग्रणी भूमिका निभाई।

जनवरी 2000 में गुजरात प्रांत का 3 दिवसीय प्रांतिक शिविर, 'संकल्प शिविर' संपन्न हुआ जिसमें 16,000 स्वयंसेवकों ने पूर्ण गणवेश ने प्रतिभाग किया। अपनी आयु एवं स्वास्थ्य की समस्याओं के चलते रज्जू भैया ने 10 मार्च, 2000 को अपने से तरुण आयु के कुप्पाहल्ली सीतारमैया सुदर्शन जी को सरसंघचालक का दायित्व सौंप दिया और श्री मोहन जी भागवत सरकार्यवाह के दायित्व पर चुने गए। संघ की 75वीं वर्षगाँठ पर संघ का संदेश हर घर तक पहुँचाने के लिए व्यापक संपर्क अभियान हुआ। अक्टूबर-2000 में ब्रज प्रांत के राष्ट्र रक्षा महाशिविर में 49,000 स्वयंसेवकों ने सहभागिता की।

26 जनवरी 2001 को गुजरात में भयंकर भूकंप की त्रासदी से पूरे देश का हृदय विदीर्ण हो गया। 35,000 से भी ज्यादा स्वयंसेवक महीनों तक राहत कार्य में जुटे रहे। इसी वर्ष जयपुर में 'राष्ट्र शक्ति संगम' में 51,000 स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। वर्ष 2002 में दक्षिण कर्नाटक का प्रांतीय शिविर 'समरसता संगम' बेंगलुरु में हुआ जिसमें 39,000 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। 17 नवम्बर को दिल्ली में 25,000 स्वयंसेवकों का गणवेश में सम्मेलन हुआ। 2003 में श्री मोरोपंत पिंगले, श्री रज्जू भैय्या और श्री चमनलाल जी का देहावसान हुआ। इसी वर्ष 'डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार' शीर्षक से डॉक्टर जी की जीवनी भारत सरकार द्वारा 'आधुनिक भारत के निर्माता' मालिका में प्रकाशित हुई। 14 अक्टूबर 2004 को वरिष्ठ प्रचारक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का देहावसान हुआ। 26 दिसम्बर को सुनामी के कारण भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में बड़ी हानि हुई, यहां भी स्वयंसेवकों ने तत्काल राहत कार्य प्रारंभ कर आपदाग्रस्त लोगों की सहायता की और बाद में उनके पुनर्वास की व्यवस्था में भी सहयोग किया। 14 अगस्त 2005 में वरिष्ठ प्रचारक श्री हो.वे.शेषाद्रि जी का देहावसान हुआ।

इस श्रृंखला में यहीं तक अगली कड़ी में बात करेंगे संघ यात्रा के अगले दशक की... ■

योग की वैश्विक स्वीकार्यता और प्रभाव

योग भारत की प्राचीनतम और महानतम देन है, जिसने न केवल भारतीय समाज को, बल्कि संपूर्ण विश्व को शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक स्वास्थ्य का मार्ग दिखाया है। आज योग एक वैश्विक आंदोलन बन चुका है, जिसकी लोकप्रियता और स्वीकार्यता विश्व के कोने-कोने में देखी जा सकती है। योग ने न केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र में, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों में भी गहरा प्रभाव डाला है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित करने का प्रस्ताव रखा, जिसे 177 देशों ने अभूतपूर्व समर्थन दिया। 2015 से हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस दिन लाखों-करोड़ों लोग सामूहिक योगाभ्यास, कार्यशालाओं, सेमिनारों और जागरूकता अभियानों में भाग लेते हैं। न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर, पेरिस के एफिल टॉवर, लंदन के ट्राफलगर स्क्वायर, बीजिंग, सिडनी, टोक्यो, मास्को, दुबई और केप टाउन जैसे प्रमुख शहरों में भव्य योग कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस आयोजन ने योग को न केवल एक वैश्विक पहचान दिलाई है, बल्कि यह विभिन्न देशों, संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के लोगों को एक मंच पर लाने में भी सफल रहा है। योग दिवस आज वैश्विक एकता, सद्भाव और शांति का प्रतीक बन चुका है, जो यह दर्शाता है कि योग केवल एक व्यायाम प्रणाली नहीं, बल्कि विश्व को जोड़ने वाला एक सांस्कृतिक सेतु है।

वैश्विक स्वास्थ्य और जीवनशैली पर प्रभाव -

1.शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव : विकसित देशों में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों- जैसे मोटापा, हृदय रोग, मधुमेह और उच्च रक्तचाप की बढ़ती चुनौतियों के बीच योग एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरा है। इसके नियमित अभ्यास से शरीर में लचीलापन, मांसपेशियों की मजबूती, पाचन तंत्र की सक्रियता और रोग प्रतिरोधक क्षमता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है।

2. मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य में योगदान : तेजी से भागती आधुनिक जीवनशैली ने मानसिक तनाव, चिंता, अवसाद और अनिद्रा को आम बना दिया है। योग और प्राणायाम ने इन समस्याओं के समाधान में निर्णायक भूमिका निभाई है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी जैसे वैश्विक संस्थानों द्वारा किए गए शोधों में यह प्रमाणित हुआ है कि योग एकाग्रता, आत्मविश्वास, और मानसिक स्पष्टता को बढ़ावा देता है।

3. चिकित्सा और पुनर्वास में योग की भूमिका : आज योग को अनेक चिकित्सा संस्थानों द्वारा पूरक चिकित्सा पद्धति के रूप में अपनाया जा रहा है। कैंसर, हृदय रोग, गठिया, अस्थमा जैसी पुरानी बीमारियों के प्रबंधन में यह एक सहायक प्रणाली बन गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने भी योग को रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन के एक प्रभावी उपकरण के रूप में मान्यता दी है।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव : योग भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है, और इसके वैश्विक विस्तार ने भारतीय दर्शन, जीवन मूल्यों और परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई है। योग के साथ-साथ आयुर्वेद, ध्यान, प्राचीन ग्रंथों और संस्कृत भाषा के प्रति भी वैश्विक रुचि बढ़ी है। यूनेस्को ने 2016 में योग को 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में मान्यता दी। सामाजिक दृष्टिकोण से योग की सार्वभौमिकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है, जो जाति, धर्म, लिंग, उम्र और राष्ट्रीयता से परे सभी को जोड़ता है। विश्वभर में योग स्टूडियो, ओपन एयर सत्रों और क्लबों के माध्यम से सामाजिक समरसता, सहिष्णुता और भाईचारे को बल मिला है। इसके अतिरिक्त, योग ने महिला सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जहाँ महिलाएं प्रशिक्षक, थेरेपिस्ट, और उद्यमी बनकर आत्मनिर्भर बनी हैं।

शिक्षा और अनुसंधान में योगदान : आज विश्व के अनेक स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में योग को शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के साधन के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के शैक्षिक संस्थानों में योग शिक्षा को अनिवार्य बनाया जा रहा है। अनुसंधान के क्षेत्र में भी योग पर व्यापक अध्ययन हो रहे हैं। हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, स्टैनफोर्ड, टोक्यो विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने योग के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रभावों पर वैज्ञानिक शोध किए हैं, जिससे योग को वैज्ञानिक आधार प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही, योग शिक्षकों और प्रशिक्षकों की वैश्विक मांग में

वृद्धि हुई है, जिससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।

आर्थिक प्रभाव: योग के वैश्विक प्रसार ने एक पूर्ण उद्योग का रूप ले लिया है, जिसमें योग स्टूडियो, योगा मैट्स और परिधान, मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन कक्षाएं, योग पर्यटन, और रिट्रीट्स शामिल हैं। अमेरिका में ही योग उद्योग का वार्षिक कारोबार 16 अरब डॉलर से अधिक है। भारत, नेपाल, बाली, थाईलैंड और श्रीलंका जैसे देशों में योग पर्यटन तेजी से विकसित हो रहा है। ऋषिकेश, हरिद्वार, वाराणसी, और काठमांडू योग के अंतरराष्ट्रीय केंद्र बन चुके हैं। इसके साथ ही, योग प्रशिक्षकों, थेरेपिस्ट्स, उत्पाद निर्माताओं और योग टूर गाइड्स के रूप में लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है, विशेषकर भारत में युवाओं के लिए यह एक नया करियर विकल्प बन चुका है।

पर्यावरणीय और वैश्विक स्थिरता में योगदान : योग का दर्शन केवल शरीर और मन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और पर्यावरण के साथ सामंजस्य की शिक्षा भी देता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना योग के मूल में है, जो संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में देखता है। हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम में 'पर्यावरणीय कल्याण' और 'सतत विकास' जैसे विषयों को भी जोड़ा गया है। योग अभ्यास ने लोगों को जैविक भोजन, प्राकृतिक चिकित्सा, और पोषणीय जीवनशैली की ओर प्रेरित किया है, जिससे पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिला है।

राजनयिक और वैश्विक संबंधों में भूमिका : योग भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का प्रमुख माध्यम बन गया है। भारतीय दूतावासों द्वारा आयोजित योग कार्यक्रमों ने भारत की 'सॉफ्ट पावर' को सशक्त किया है, जिससे भारत की छवि एक शांतिप्रिय, स्वास्थ्यप्रद और समावेशी राष्ट्र के रूप में उभरी है। योग के सिद्धांत - जैसे अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह वैश्विक शांति, सह-अस्तित्व और सद्भाव को प्रोत्साहित करते हैं। संयुक्त राष्ट्र, WHO और UNESCO जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने योग को वैश्विक शांति और सतत विकास के एक सशक्त साधन के रूप में स्वीकार किया है।

योग पर वैश्विक नेतृत्व और संस्थाओं की दृष्टि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना से लेकर इसके वैश्विक प्रचार-प्रसार तक, विश्व के अनेक राष्ट्राध्यक्षों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने योग की सार्वभौमिकता, स्वास्थ्य लाभ, और वैश्विक शांति में योगदान को खुले रूप में सराहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग दिवस का प्रस्ताव रखा, जिसे 177 देशों का अभूतपूर्व समर्थन मिला। मोदी ने इसे जनस्वास्थ्य और वैश्विक एकता का प्रतीक बताया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून और अन्य अधिकारियों ने योग को मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य का साधन बताया। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने योग को अमेरिकी जीवनशैली का अंग माना, वहीं फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, और कनाडा जैसे देशों ने भी इसे मानसिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक कल्याण के लिए उपयोगी बताया। एशिया के कई राष्ट्राध्यक्षों जैसे दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, और मंगोलिया ने योग के सामाजिक और मानसिक लाभों की प्रशंसा की है।

इस्लामी देशों में भी योग को बढ़ावा मिला है; सऊदी अरब में योग को खेल गतिविधि का दर्जा मिला और इजरायल में यह स्कूली शिक्षा में शामिल किया गया है। WHO ने योग को स्वास्थ्य संवर्धन और गैर-संचारी रोगों की रोकथाम में प्रभावी बताया, जबकि UNESCO ने इसे मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी। हर वर्ष 21 जून को विश्वभर के प्रमुख शहरों में लाखों लोग सामूहिक योगाभ्यास में भाग लेते हैं, जो योग की वैश्विक स्वीकार्यता और प्रभाव को दर्शाता है। ■

अतीत के आईने में खेती

रामवीर श्रेष्ठ
एंकर, संसद टीवी

भारत में खेती का इतिहास हजारों बरस पुराना है। ये तो इतिहास है, खेती की परंपरा कितनी पुरानी कहना मुश्किल है। हमने नवधान्य के काल भी देखे, और अकाल भी देखे। इतिहास ने वो दौर भी देखा जब 1860 से 1920 के बीच करीब 100 मिलियन यानि 10 करोड़ लोग भूख से मर गए थे। लेकिन जैसे ही हम आजाद हुए, और लगान के दबाव को छोड़ खेती की कमान किसानों ने संभाली तो अन्न के भंडार भरते चले गए। 1950 से 2024 के बीच हमारी आबादी 4 गुणा बढ़ी, लेकिन हमारे किसानों ने उत्पादन को 6 गुणा तक बढ़ा दिया। अकेले, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के एक छोटे से हिस्से में देश के

1950 से 2024 के बीच हमारी आबादी 4 गुणा बढ़ी, लेकिन हमारे किसानों ने उत्पादन को 6 गुणा तक बढ़ा दिया। अकेले, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के एक छोटे से हिस्से में देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन का 72 फीसदी अन्न पैदा हो रहा है। आनंद की बात तो ये है कि ये इलाका, हमारी कृषि भूमि के 5 प्रतिशत से भी ज्यादा नहीं है। मतलब संभावनाओं का आसमान तो अभी भी बाकी है।

कुल खाद्यान्न उत्पादन का 72 फीसदी अन्न पैदा हो रहा है। आनंद की बात तो ये है कि ये इलाका,हमारी कृषि भूमि के 5 प्रतिशत से भी ज्यादा नहीं है। मतलब संभावनाओं का आसमान तो अभी भी बाकी है। मसलन 1950 में हमारी आबादी 36 करोड़ थी और अनाज का उत्पादन 50.58 मीट्रिक टन, वहीं 1950 से 1960 के बीच एक मात्र एक दशक में खाद्यान्न उत्पादन में 60 फीसदी की बढ़ोत्तरी देखने को मिली। नतीजा ये हुआ कि 2020–2021 में खाद्यान्न का उत्पादन बढ़कर 315 मिलियन टन हो गया। एक व्यक्ति की औसत जरूरत 100 किलो मानी जाती है, और हमारे किसान सरप्लस उत्पादन कर रहे हैं।

दलहन-तिलहन पर काम होना बाकी : हालांकि अभी भी भारत को हर साल 7 मिलियन टन दालों का आयात करना पड़ता है, वहीं तेल का उत्पादन 12 मिलियन टन, जरूरत 24 मिलियन टन है, इस अंतर को भी आयात से ही पाटना पड़ता है। मोटे अनाज की कमी भी कुपोषण की वजह मानी जा रही है। वजह, हमारे कुल खाद्यान्न का 70 फीसदी गेहूं और चावल है, जिसमें 110 मिलियन टन गेहूं का उत्पादन होता है, वहीं हमारे किसान सालाना 120 मिलियन टन चावल का उत्पादन करते हैं।

संभावनाओं की जमीन : भारत में कुल

भूमि 327.7 मिलियन हेक्टेयर जिसमें से 140 मिलियन हेक्टेयर जमीन पर खेती होती है, इसमें से मात्र 68.5 मिलियन हेक्टेयर जमीन सिंचाईयुक्त है, 40 फीसदी जमीन सिंचाई के दायरे से अभी बाहर है, हालांकि देश के सिंचित क्षेत्र में 56 फीसदी लोग लोग निवास करते हैं, मतलब साफ है, जहां पानी वहां ज्यादा लोग। हालांकि 1950 के मुकाबले सिंचाई साधनों में 3 गुणा विकास हुआ है, मगर ये अभी भी नाकाफी है। इसमें और विकास की जरूरत है। यानि हर खेत को पानी मिलना अभी भी बाकी है।

गरम होती धरती चिंता का विषय : आंकड़े बताते हैं कि बीते 100 साल में धरती का तापमान 0.8 डिग्री तक बढ़ा है, दिलचस्प बात ये है कि इसमें से 0.6 डिग्री सेल्सियस तापमान महज पिछले 30 सालों में बढ़ा। कृषि वैज्ञानिक मानते हैं कि अगर धरती का तापमान 1 से 2 डिग्री तक बढता है तो कृषि उत्पादन में 15 से 20 फीसदी की कमी हो जाएगी।

पानी के पाताल जाने का खतरा! : खेती के सामने दूसरी बड़ी समस्या पानी की भी है, क्योंकि 1950 में जहां भारत के एक व्यक्ति के हिस्से में 5 हजार क्यूबिक मीटर पानी आ रहा था, वही 2021 में घटकर मात्र 1500 क्यूबिक मीटर रह गया। अगर इसी रफ्तार से जल उपलब्धता में ये गिरावट जारी रही तो 2050 तक प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 1100 क्यूबिक मीटर से भी कम रह जाएगी। चिंता की बड़ी बात ये भी है कि इसमें से 80 फीसदी पानी का उपयोग खेती में ही होता है, जिसका सीधा मतलब है कि अगर पानी की उपलब्धता कम होती है तो हमारी खेती और खाद्यान्न सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

फैक्टर उत्पादन का गणित : एक और फैक्टर है, इसे फैक्टर उत्पादन ही कहते हैं, 80 के दशक से ये लगातार घट रहा है। इसका मतलब होता है जब अगले साल उतनी ही खाद डालने पर भी उत्पादन कम होने लगे, तो इसे फैक्टर उत्पादन का कम होना कहा जाता है, उद्यारण के लिए 1980 में 1 किलो खाद से खाद्यान्न में 14 किलो की बढ़ोत्तरी हो रही थी, जो 2022 घटकर मात्र 5 किलोग्राम रह गई है। मतलब अगर आप आज वही एक किलो खाद लगा रहे हैं तो आपका उत्पादन महज 5 किलोग्राम ही रह जा रहा है। माना जा रहा है कि अगर रासायनिक खादों का प्रयोग यूं ही होता रहा है, तो ये एक दिन पूरी तरह माइनस में भी जा सकता है।

आखिरी चुनौती : ये चुनौती स्वयं किसान के खेत हैं, जो साइज में बहुत छोटे हैं, जिनकी वजह से खेती के प्रबंधन में बहुत मुश्किलें आती हैं। आंकड़ों के मुताबिक 1970 में एक किसान के हिस्से में औसत ढाई हेक्टेयर जमीन जो अब घटकर मात्र 1.08 हेक्टेयर रह गई है। इसमें भी बड़ी बात ये है कि 86 फीसदी किसान छोटे किसान हैं, जबकि 13 फीसदी मझोले, मात्र 2 फीसदी किसान हैं, जिन्हें आप बड़ा किसान कह सकते हैं।

आसमां अभी ओर भी हैं : इस पूरी तस्वीर के बावजूद देश भर में कुछ ऐसे किसान भी हैं जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में समस्याओं के समाधान को ढूंढा है, वो रोल मॉडल बनें हैं, ऐसे किसानों को तलाशने के लिए हम एक देशव्यापी यात्रा पर हैं। हमने उनके प्रयासों को लगातार कई चैनलों में रहते हुए कवर किया और देश को उनसे परिचित कराने की कोशिश की। इस पुस्तक में हमने देश के 15 एग्रो क्लाइमेटिक जोन के अनुसार ऐसे किसानों के प्रयासों को आप तक लाने का प्रयास किया है, जिसमें हम हर साल कुछ और प्रयासों को जोड़कर आप तक पहुंचाने की कोशिश करते रहेंगे।

देश की अस्मिता और देश प्रेम के दोहे

विश्व पटल पर यूँ नहीं, भारत है सिरमौर।
इसकी गाथा और है, इसकी बातें और।।
मेरा भारत विश्व में, बने सदा सिर-मौर।
जात-पाँत, दुख-द्वेष का, थमे यहीं अब दौर।।
भेदभाव सब भूल कर, रहना मिलकर संग।
हम हैं केवल भारती, भारत माँ के अंग।।
शिक्षा पर हम ध्यान दें, स्वच्छ रखें हम गाँव।
नव संकल्पों से धरें, आगे-आगे पाँव।।
एक बात पर दीजिये, थोड़ा सा निज ध्यान।
देश क्लेश में जो रहा, होगा क्या उत्थान।।
फर्ज नींद में सो गये, जाग रहे अधिकार।
देश प्रेम का फिर कहो, कैसे हो संचार।।
भारत ऐसा देश है, उपजाता जो प्यार।
मन की माटी सींचती, गंगा-जमुनी धार।।

– आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'

देश के लिए कुछ अपशकुन

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

एक व्यापारी उदार चित्तवृत्ति का था। एक दिन उसकी दुकान के समक्ष एक फकीर आया। फकीर ने हाथ पसारे, मुँह उठा कर आसमान की ओर ताकने लगा। फिर तेज आवाज में कहा- मौला देख तेरे बन्दे फकीरों की ओर देखते तक नहीं। जबकि तू है कि इनकी झोली भरता जा रहा है।

तभी एक महिला मुल्ला फकीर को इस तरह चिल्लाते देख कर ठिठक गयी। उसने बुरका उठाये बिना फकीर से कहा, अरे शर्म कर। मौला को कोस रहा है। तेरा ईमान कहां गया। मौला यह भी देखता है कि तू हट्टा-कट्टा होकर भीख मांगने आ गया।

जिसकी दुकान के सामने खड़ा है उसी पर तंज कस रहा है। जबकि यह दुकानदार एक पांव से असमर्थ, लाचार होकर भी काम करके खाता और खिलाता है। वह तुझे क्यों भीख दे। तुझे लज्जा क्यों नहीं आती। तुझको क्यों लगता है कि भीख मांगते हुए तूने किसी को जलील करने का अधिकार हासिल कर लिया है। तू तो एक निर्लज्ज इंसान भर है।

तभी दुकानदार वहां खाने की कुछ चीजें लेकर घर के भीतर से निकला। उसने फकीर और उस मुस्लिम महिला को प्रणाम किया। फिर उनकी ओर टोकरी बढ़ाते हुए कहा यह सामग्री भीख के नाम पर नहीं है। मेरे घर के मन्दिर में पूजा हुई है। आप दोनों प्रसाद ग्रहण कीजिए। प्रसाद का नाम सुनते ही मुल्ला फकीर तेजी से आगे बढ़ गया। पर बुरका वाली महिला ने दुवाएं देते हुए उसे स्वीकार कर लिया।

यह कहानी वास्तविक घटना के एक दृश्य पर आधारित है। लखनऊ के रकाबगंज बाजार से मैडिकल कॉलेज जाने वाले मार्ग की है। कुछ लोग सम्भवतः भीख को प्रसाद से अधिक पवित्र समझने की भूल करते हैं। अच्छा तो यही होगा कि आस्था को इतना बौना समझने की धृष्टता ऐसे लोग नहीं करें। जिन पर समाज को सम्भालने का गुरुतर दायित्व है उनको चाहिए कि सामान्य जन से लेकर हर वर्ग को एक जैसी सीख दें। सभी को यह समझ मिल जुल कर बनानी चाहिए कि एक देश में सभी वर्गों के नागरिक तभी चैन से रह सकेंगे जब सामाजिक साझेदारी के सिद्धान्त को हृदय में पूरे मन से स्वीकार करेंगे।

क्या यह सच्चाई किसी से अब छिपी रह गयी है कि भारत के गांव हों या नगर जहां कहीं हिन्दुओं और मुसलमानों की बस्तियां आस पास हैं, हर जगह पारस्परिक कटुता बढाने वालों की कुटिलता भरी बातें इन दिनों ज्यादा सुनी जा रही हैं। दिन हो या रात, घर हो या बाजार काम से अधिक बैठे ठाले लोगों को भी उनके मोबाइल भड़का रहे हैं। जनसंख्या से अधिक मोबाइल दिख रहे हैं। जाने कहां से बरसात की बून्दों की तरह टपके यह उपकरण सभी को अपने विष भरे रस में भिगो रहे हैं।

मजहबी उन्मादी अपने समाज को लम्बे समय से जाने क्यों उलझाते आ रहे हैं कि आस्था के मन्दिर और मस्जिद में रहने वाले भक्त वत्सल भगवान और सब पर रहम की बरसात करने वाले अल्लाह अलग-अलग हैं। यह भी कि यह दोनों अदृश्य शक्तियां परस्पर शत्रु हैं। तभी तो मुस्लिम बस्तियों के नासमझ किशोरों तक के कान जाकिर नाईक और

पाकिस्तान के कट्टर पंथियों की तकरीरों को सुनकर भभकते आ रहे हैं। इस विभेद को बढ़ते देखकर कुछ नहीं अधिकतर राजनीतिक दल बहुत खुश हो रहे हैं। ऐसी खुशी कुछ दलों के नेताओं को 1946 के पहले भी मिलने लगी थी। पहले भी भारत में मुस्लिम कट्टर पंथी उकसाये गये थे। उनकी आग को उग्र होते देख तब भी भारत के कई ऐसे हिन्दू नेता बहुत खुश होते थे जिन्हें टकराव और विखराव से आनन्द की अनुभूति होती थी। कांग्रेस में तब भी ऐसे लोग थे जो मुस्लिम कट्टर पंथियों से अधिक हिन्दुओं को शान्ति और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाते थे। भीम राव अम्बेडकर जैसे नेता ने अपने सब्र और समझ का परिचय नहीं दिया होता तो जोगेन्द्र नाथ मण्डल जैसी भूल कई और नेता कर बैठते। आज फिर दृश्य ज्यादा भयावह बनाने को कुछ निगोड़े आतुर हैं। पश्चिम उत्तर प्रदेश का एक नेता मुसलमान मतों के लोभ में भारतीय समाज को विखण्डित करने का बीड़ा चबाये फिर रहा है। कौन नहीं जानता कि उसकी ऊँची पतंग को कौन हवा दे रहा है। किसके बल से उसकी वाणी विष घोल रही है।

भारत में भारत के शत्रु पलते आ रहे हैं। राजनीति के साथ ही लोकतन्त्र के कई अन्य अंग ऐसे शत्रुओं को प्रश्रय दे रहे हैं। यह डर समाज को विषधर की तरह डस रहा है। सबसे अधिक चिन्ता ऐसे प्रकरण सुनकर होती है कि लम्बे अर्से से न्याय पालिका के भीतर भी बहुत कुछ ऐसा घटता आ रहा है जो देश की अखण्डता की रक्षा के लिए किसी तरह सामान्य नहीं है। काश ऐसा न हो। पर कोई यह सुनकर क्यों चौंक पड़ता है कि देश के एक प्रधान न्यायाधीश को एक कथित अपराधी को जमानत दिलाने के लिए छुट्टी के दिन रात में दो बार नयी पीठ गठित करने पर विवश किया गया था। तब वह प्रधान न्यायाधीश इतना दुर्बल क्यों सिद्ध हुआ था कि अब सारा देश उसके नाम पर लज्जा की अनुभूति कर रहा है। भारत का कोई सामान्य जन इस प्रकरण को भुलाने के लिए किस देवता की स्तुति करे। या फिर उन्हें न्यायमूर्ति कैसे कहे जिनके घर में ईंटों से अधिक नोट बिखरे मिले। फिर भी उनसे किसी को कुछ पूछने तक की अनुमति नहीं दी गयी।

जिस विविधता में एकता की बात करते हुए हम भारतीय गर्व से हाथ उठाकर कहते थे कि हमारी विविधता में एकता निहित है। उसे ही भारत के आन्तरिक शत्रु अपना अस्त्र बनाकर एकता की जड़ें काटने में जुटे हैं। जिन दलों के चन्द नेताओं को कई बार मूर्ख कहकर अनदेखी की जाती है वह बाहरी शत्रुओं के हाथों के औजार बनकर इतरा रहे हैं। निःसन्देह राष्ट्र भक्तों के लिए यह बहुत गम्भीरता से सोचकर चलने और रणनीति बनाने का समय है।

हे भारत यह सब क्या हो रहा है। भारत में एक समय ऐसा भी था जब पाठशालाओं में किसी महान व्यक्ति का लड़का पढ़ने जाता तो उसके साथ मास्टर के हाथों मार खाने के लिए एक सेवक भी भेजा जाता। बड़े आदमी का लड़का कोई दुष्टता करता तो मास्टर उसके सेवक को पिटने के लिए खड़ा करता। अपना गुस्सा उसी पर उतार देता।

बड़ों के बड़प्पन को बचाने की यह तरकीब जाने क्यों बन्द हो गयी। छोटी बड़ी भूलों के कारण भारत की धरती 1947 में तीन टुकडों में बंटी थी। दो टुकड़े मुस्लिम लीग ले उड़ी थी। एक बचे हुए भाग में रहे लोग वही भूल करेंगे तो बहुत बुरा होगा।

भारत को अपने वर्चस्व और स्वत्व की रक्षा के लिए अब किसे गुहारना चाहिए। कितने लोगों के मानस में देश की अखण्डता के लिए हूक उठ रही है। जिस विविधता में एकता की बात करते हुए हम भारतीय गर्व से हाथ उठाकर कहते थे कि हमारी विविधता में एकता निहित है। उसे ही भारत के आन्तरिक शत्रु अपना अस्त्र बनाकर एकता की जड़ें काटने में जुटे हैं। जिन दलों के चन्द नेताओं को कई बार मूर्ख कहकर अनदेखी की जाती है वह बाहरी शत्रुओं के हाथों के औजार बनकर इतरा रहे हैं। निःसन्देह राष्ट्र भक्तों के लिए यह बहुत गम्भीरता से सोचकर चलने और रणनीति बनाने का समय है।

उन लोगों की सोच को धिक्कारना होगा जो कहते हैं कि फिलिस्तीन और इजरायल जैसी दशा भारत के भीतर दिख रही है। देश के भीतर कुछ द्रोही लोगों के मस्तिष्क की यह उपज भय पैदा करने के लिए है। उनके विकृत मानस से कोई शुभ सन्देश तो उपजेगा नहीं। इसलिए ऐसे लोगों को महत्व देने से अच्छा है कि उन शक्तियों की सराहना की जाय जो भारतीय समाज में स्व की भावना जगाने के अभियान में रात दिन लगे हैं। भारत में रह रही सम्पूर्ण जनशक्ति को बाँटने वाले सफल नहीं हो सकते। जागरूक लोग सबल हैं। उनको निर्बल और अक्षम वही मानते हैं जो सावरकर जैसे महावीरों पर कटाक्ष करते हैं। कुप्रवृत्तियों के कारण चन्द कुमार्गी, विधर्मी लोग भारत के भाग्य का निर्धारण नहीं कर सकते। ऐसे लोग छल पूर्वक कोई क्षणिक सफलता पाकर भी अंतःकरण के विकारों के कारण एक दिन समय चक्र में फंस कर महाभारत कालीन जरासंध और शिशुपाल की तरह विनष्ट हो जाएंगे। ■

नाट्यशास्त्र पर भारतीय दर्शन

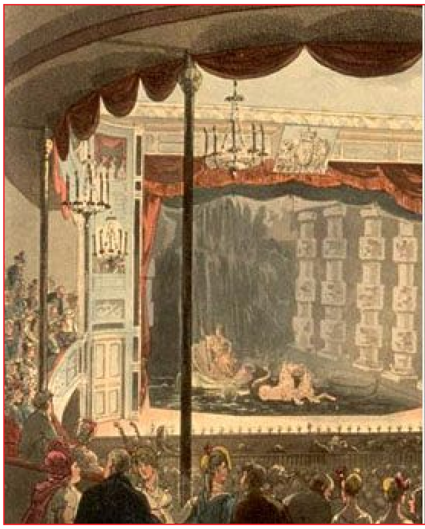

अमित शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, आईपी विश्वविद्यालय, दिल्ली

यूनेस्को ने इस बार विश्व धरोहर दिवस पर भारत के आदिग्रंथ श्रीमद्भग्वदगीता और भरत मुनि रचित नाट्य शास्त्र को अपने स्मृतिकोष में शामिल किया है। यूनेस्को के विश्व स्मृति रजिस्टर में विश्व की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों को शामिल करने का उद्देश्य इन धरोहरों को संरक्षित रखना और इनमें दर्ज ज्ञान को दुनिया के सामने लाना है। ऐसे में भारत की शाश्वत ज्ञान परंपरा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की महत्ता एक बार फिर वैश्विक स्तर पर स्थापित हुई है।

श्रीमद्भग्वदगीता आदिग्रंथ महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। इसमें वर्णित निष्काम कर्म को आधुनिक मैनेजमेंट गुरु भी जीवन जीने की कला का आधारमंत्र मानते हैं। गीता के ज्ञान की व्याख्या हमारे समाज में काफी प्रचलित रही है। लेकिन भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र के बारे में आमजन उतना परिचित नहीं हैं। जबकि इसे आधुनिक संचार सिद्धांतों का प्रेरणा आधार माना जाए तो ये अतिश्योक्ति नहीं होगा।

भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र को भारत की ललित कलाओं का प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। भरत मुनि लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के एक महान ऋषि और विद्वान थे। संस्कृत में रचित इनका ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' कुल 36 अध्यायों में विभाजित है। इसमें नाट्यकला के सभी अंगों - अभिनय, संवाद, रस, संगीत, नृत्य, रंगमंच की संरचना, भावों की अभिव्यक्ति तथा दर्शकों पर प्रभाव डालने की विधियों का विस्तार से वर्णन है। भरत मुनि ने नाट्यकला को 'पंचम वेद' की संज्ञा दी है- एक ऐसा माध्यम जो वेदों के ज्ञान को आम जन तक पहुंचाने में सक्षम है। भरत मुनि ने नाटक को 'लोक शिक्षाय कामार्थम्' अर्थात् लोक (आमजन) को शिक्षा और आनंद देने वाला माध्यम बताया है। यह परिभाषा नाट्य को एक प्रभावी संचार साधन के रूप में भी स्थापित करती है। दरअसल भरत मुनि का नाट्यशास्त्र केवल प्राचीन नाट्यकला का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक अत्यंत आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला संचार-सिद्धांत भी है।

संचार (Communication) आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। संचार क्रांति ने हमारी पूरी दुनिया ही बदल दी है। अखबार,रेडियो,टीवी से लेकर डिजिटल मीडिया तक -हम संचार माध्यमों से घिरे हैं।

क्या हैं संचार? : संचार को समझने के लिए कई संचार सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। इऩमें विदेशी संचार सिद्धांत और भारतीय संचार सिद्धांत दोनों शामिल हैं। परंतु दोनों में कुछ आधारभूत विभिन्नतायें दिखती हैं। विदेशी संचार सिद्दांतों का विकास आधुनिक पश्चिमी समाज की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हुआ है। इऩका जोर संदेश के प्रसारण की प्रक्रिया और माध्यम के प्रभाव पर ज्यादा रहता है। वहीं भारतीय संचार सिद्धांत संदेश को इसके मूल रुप में समझने और इस समझदारी को विकसित करने पर जोर देते हैं। भारतीय संचार सिद्धांत दर्शन, अनुभूति और सांस्कृतिक अनुभव पर आधारित हैं। भारतीय संचार परंपरा में संदेश सिर्फ जानकारी भर नहीं है बल्कि भाव और अनुभव का संचार है। संचार का उद्देश्य सिर्फ बताना नहीं बल्कि अनुभव कराना है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर में भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है, जो इसी भावपूर्ण संप्रेषण की महत्ता प्रतिपादित करता है। यह न केवल रंगमंच और नाट्यकला का वैज्ञानिक दस्तावेज है, बल्कि संचार के सिद्धांतों का भी गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह ग्रंथ आज भी नाट्य, सिनेमा, मीडिया और संवाद

प्रक्रिया के अध्ययन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। कई विद्वान मानते हैं कि इसी पूर्वी दर्शन और कला शास्त्र ने अप्रत्यक्ष रुप से संचार की वैश्विक विचारधारा को भी प्रभावित किया है। कई विद्वानों का तर्क है कि नाट्यशास्त्र के रस सिद्दांत में संचार का जो गहराईपूर्ण विश्लेषण है, वो कई आधुनिक सिद्धांतों से अधिक विकसित है।

'नाट्यशास्त्र' में समानता के सूत्र : कई आधुनिक संचार मॉडलों में समानता के सूत्र भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में साफ दिखाई देते हैं। संचार प्रक्रिया को समझने के लिए 'शैनन-वीवर मॉडल' का पश्चिमी संचार मॉडलों में प्रमुख स्थान है। इसे अमेरिका के वैज्ञानिकों क्लाउड शैनन और वैरेन वीवर ने 1948-49 में प्रतिपादित किया था। इस संचार मॉडल ने बाद के कई पश्चिमी संचार सिद्धांतों को प्रभावित किया। इसमें प्रतिपादित किया गया है कि संचार एक प्रक्रिया है जिसमें प्रेषक, संदेश, माध्यम, ग्रहणकर्ता और अभिपुष्टि शामिल होते हैं। आश्चर्य की बात है कि नाट्यशास्त्र में यह प्रक्रिया हजारों वर्ष पहले ही व्याख्यायित की जा चुकी थी। बल्कि भरत मुनि का संचार का दृष्टिकोण समग्र है जिसमें व्यक्ति, समाज, भावनाएँ और भाषा - सभी शामिल होते हैं।

इसी तरह सन् 1960 में अमेरिका के विद्वान डेविड बर्लो ने एक मॉडल प्रतिपादित किया जिसे बर्लों एसएमसीआर मॉडल के नाम से जाना जाता है। बर्लों संचार प्रक्रिया में प्रेषक संदेश माध्यम, ग्रहणकर्ता के तत्वों को महत्वपूर्ण मानते हैं। इसके साथ ही बर्लो संदेश के प्रभावशाली संप्रेषण की बात कहते हैं। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में संप्रेषण के ये सभी तत्व शामिल हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार संचार का अंतिम उद्देश्य रसों की अभिव्यक्ति और संदेश का भावात्मक अनुभव है। नाट्यशास्त्र बताता है कि संदेश की सफलता तभी है जब वो दर्शकों के अंतर्मन को छू ले।

भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण योगदान है, रस सिद्धांत और भाव संप्रेषण। भरत मुनि ने कहा है कि भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। रस वो भाव है जो दर्शकों में उत्पन्न होता है, जैसे- करुणा, हास्य, रौद्र, शांत आदि। कलाकार अपनी वाणी, मुखमुद्रा, शारीरिक हाव-भाव आदि से इन रसों को दर्शकों तक पहुंचाता है। इस प्रकार रस केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि एक सशक्त संचार प्रक्रिया है। यहां नाट्यशास्त्र एक अत्यंत संवेदनशील संचार प्रक्रिया का वर्णन करता है जहां शब्दों से अधिक भावनाओं की भूमिका होती है। दर्शक कलाकार के साथ आत्मीयता अनुभव करते हैं और उसी भाव का अनुभव करते हैं। यहीं सफल संचार का मूल तत्व है। इसी तरह नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने अभिनय के भी चार प्रकार बताए हैं जो मूलतः संचार के विभिन्न माध्यमों की तरह कार्य करते हैं। भरत मुनि ने वाचिक, आंगिक, सात्विक और आहार्य अभिनय के माध्यम से प्रतीकों और संकेतों को विस्तार से समझाया है। पहला, वाचिक अभिनय जिसमें संवाद और उच्चारण से विचारों का संप्रेषण किया जाता है। यह आज के आडियो माध्यम जैसे रेडियो, पॉडकास्ट आदि की तरह है। दूसरा, आंगिक अभिनय जिसमें शारीरिक गति, इशारों और मुद्राओं से संप्रेषण होता है। यह नॉन-वर्बल कम्यूनिकेशन का आधार है। तीसरा, सात्त्विक अभिनय जिसमें आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अंतर्मन के प्रतीकों का सहारा लिया जाता है। जैसे आंखों में आंसू, भय का कंपन, हृदय का धड़कना आदि दिखाते हैं कि संचार सिर्फ बाह्य नहीं बल्कि अंतर्मन से भी होता है। चौथा, आहार्य अभिनय जिसमें वेशभूषा, मंच-सज्जा आदि शामिल हैं। यह दृश्य प्रभाव के माध्यम से संचार है। आधुनिक फिल्मों में सेट-डिजाइन और कास्ट्यूम का इस्तेमाल कर प्रभावी संचार स्थापित किया जाता है।

संचार आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। संचार क्रांति ने हमारी पूरी दुनिया ही बदल दी है। अखबार,रेडियो,टीवी से लेकर डिजिटल मीडिया तक हम संचार माध्यमों से घिरे हैं।

इसी तरह एक प्रसिद्ध पश्चिमी संचार सिद्धांत है। उपयोग और संतुष्टि सिद्धांत। इसके अनुसार लोग सक्रिय रुप से मीडिया का चयन करते हैं और इसका उपयोग अपनी जरुरतों को पूरा कर संतुष्टि प्राप्त करने के लिए करते हैं। इन जरुरतों के चार प्रमुख तत्व हैं। मनोरंजन, सूचना, भावनात्मक राहत, सामाजिक जुड़ाव। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भी कहता है कि नाटक का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि मूल्यपरक शिक्षा और सूचना भी है। इसके साथ ही नाटक से दर्शक भावनात्मक जुड़ाव महसूस करते हैं और साथ ही ये सामाजिक जुडाव की भी वजह बनता है। इस तरह यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन थ्योरी के चारों तत्व भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में पहले से निहित हैं।

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र न केवल भारतीय रंगमंच की नींव है, बल्कि इसकी गणना संचार विज्ञान के सर्वप्रथम और प्रमुख ग्रंथ के रूप में भी की जा सकती है। यह भारत में संचार सिद्धांतों की नींव रखने वाला ग्रंथ है। इसमें संचार की वैज्ञानिक और कलात्मक विधियों को जिस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है, वह आज के आधुनिक संचार माध्यमों के लिए भी मार्गदर्शक है। यह एक समृद्ध, संवेदनशील और बहुआयामी संचार प्रक्रिया है, जिसे आधुनिक तकनीक और मीडिया माध्यमों में भी अपनाया जा रहा है।

इस तरह भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारत के शाश्वत ज्ञान का प्रतीक है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ-साथ नाट्यकला और वैश्विक संचार साहित्य की भी एक अमूल्य निधि है। यूनेस्को ने इसे विश्व स्मृति रजिस्टर में दाखिल कर इसी मान्यता की पुष्टि की है। ■

संस्कारों की आधारशिला 'कुटुंब'

एक घर, अनेक दिल, एक धड़कन

कल्पना सिंह
स्वतंत्र टिप्पणीकार

विकास की अंधी दौड़ और आधुनिकता की चकाचौंध में आज एकल परिवार निरंतर बढ़ते जा रहे हैं, ऐसे में कुछ परिवारों की एकजुटता समाज के लिए प्रेरणा बन रही है। भारत की कुटुंब प्रणाली मात्र एक सामाजिक व्यवस्था नहीं, अपितु भारतीय जीवन-दर्शन का वह आधार है, जिसमें प्रेम, अनुशासन, सेवा, त्याग और उत्तरदायित्व का अद्वितीय समन्वय है। संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति का वह सुदृढ़ आधार है जहां कई पीढ़ियां एक ही छत के नीचे, रसोई से लेकर रिश्तों तक, सब कुछ साझा करती हैं। यह मात्र निवास नहीं, एक जीवंत संस्था है, एक पाठशाला है, जहां संस्कार पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं।

शाहजहांपुर का कुटुंब : शाहजहांपुर जनपद के घुसगवां गांव निवासी श्याम सिंह का 64 सदस्यों वाला विशाल संयुक्त परिवार आज भी प्रेम, अनुशासन और सेवा की भावना के साथ चार पीढ़ियों को एक साथ जीता हुआ दिखता है। पुरुष सदस्य खेती-किसानी द्वारा संसाधन जुटाते हैं, महिलाएं घर और परिवार का संचालन करती हैं। कुटुंब के मुखिया श्याम सिंह हैं, पारस्परिक परामर्श के बाद उनका निर्णय सर्वमान्य होता है। यही अनुशासन और नेतृत्व का प्रतीक है। यह परिवार दिखाता है कि जब बुजुर्गों की बात श्रद्धा से मानी जाए और निर्णयों में परामर्श हो, तो पारिवारिक जीवन एक यज्ञकुंड की भांति पवित्र और सशक्त बन जाता है। कुटुंब में अधिकारों और कर्तव्यों की सामंजस्यता देखने को मिलती है। बच्चों की शिक्षा, विवाह, खेती की योजना, सभी विषयों में बुजुर्गों का मार्गदर्शन सर्वोपरि रहता है। यह भारत की मूल्यनिष्ठ परंपरा है।

शेयरिंग एंड केयरिंग : मेरठ के डॉ. संजीव सक्सेना और आमोद भारद्वाज के परिवार भी आज के युग में सामाजिक समरसता का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। डॉ. सक्सेना अपने भाइयों के साथ एक ही घर में रहते हैं और "शेयरिंग एंड केयरिंग" को जीवन का मूलमंत्र मानते हैं। इसी प्रकार, आमोद भारद्वाज का 24 सदस्यीय परिवार भी रसोई से रिश्तों तक हर बात साझा करता है। बिजनौर जिले के समीपुर गांव की भगवती देवी का परिवार आज भी एक चूल्हे की

रोटियां खाता है। इसी प्रकार मुजफ्फरनगर के करहेड़ा ग्राम निवासी सुरेश चंद शर्मा का परिवार भी तीन पीढ़ियों से साथ है। सभी सदस्य एक साथ भोजन करते हैं।

परिवार से जुड़े हर निर्णय से पूर्व मुखिया से परामर्श होता है। संयुक्त परिवार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां जीवन के हर भाव साझा होते हैं। चाहे वह हर्ष का क्षण हो या विषाद का। यहां कोई अकेला नहीं होता, परिवार एक कवच की भांति हर सदस्य के साथ खड़ा रहता है। बच्चों को देखभाल, संस्कार, स्नेह और अनुशासन साथ-साथ मिलता है और बुजुर्गों को सम्मान। कुटुंब में प्रतिदिन सहनशीलता, सहयोग, समर्पण और सौहार्द की पाठशाला चलती है। इन कुटुंबों की नव-वधुएँ भी पारिवारिक मूल्यों को आत्मसात कर लेती हैं। यह प्रमाण है कि यदि संस्कारों की नींव मजबूत हो, तो आधुनिकता भी एकात्मता को बाधित नहीं कर सकती।

कुटुंब प्रबोधन : संघ का दृष्टिकोण: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रवर्तित "कुटुंब प्रबोधन" मात्र पारिवारिक व्यवस्था की बात नहीं करता, वह तो इसे राष्ट्रनिर्माण की मूल ईकाई मानता है। संघ मानता है कि "जिस राष्ट्र की इकाई परिवार है, वही राष्ट्र सांस्कृतिक दृष्टि से जीवंत रह सकता है।" स्वयंसेवकों द्वारा संवाद, साप्ताहिक सामूहिक भोज और परिवार मिलन जैसे कार्यक्रम कुटुंब की अवधारणा का ही पोषण करते हैं। यह सब इस बात का प्रतीक हैं कि यदि परिवार स्वस्थ है, तो समाज और राष्ट्र भी संगठित और सशक्त होगा। कुटुंब प्रबोधन का उद्देश्य केवल संयुक्तता नहीं, एकात्मता है। यह युगानुकूल जीवनशैली और शाश्वत मूल्यों का समन्वय है।

संयुक्त परिवार : वर्तमान की आवश्यकता, भविष्य की पूंजी : आज के युग में जब एकल परिवारों में अकेलापन, तनाव और अवसाद बढ़ रहा है, तब संयुक्त परिवार एक संबल बनकर उभरता है। यह वह व्यवस्था है जो भावनात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक सुरक्षा देती है। संयुक्त परिवारों में मतभेद हो सकते हैं, किंतु मनभेद नहीं। परस्पर संवाद से हर समस्या का समाधान निकल आता है। संयुक्त परिवार एक दीपस्तंभ की भांति है, जो दिखाता है कि सामूहिक जीवन में कितनी शक्ति, गरिमा और संतोष निहित है। एक ही छत के नीचे एक रसोई से बनी रोटियां पूरे परिवार को जोड़ती हैं, तो वह केवल भोजन नहीं, प्रेम, परंपरा और एकता का प्रसाद होता है। संघ का यह भाव सार्थक है। यदि राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना है, तो पहले घर को संगठित करना होगा। 'मैं' नहीं, 'हम' की भावना से पोषित 'कुटुंब' समस्त विश्व को भारत की अद्भुत देन है। अपनी इस दिव्य परंपरा को संरक्षित और संवर्धित कर नई पीढ़ी को हस्तांतरित करना हम सबका सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय कर्तव्य है। ■

जब मैं अजरबैजान में थी...

8 मई 2025 को मैं अजरबैजान में थी। वह एक ऐसा पल था जब हेदर अलीयेव अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पर उतरते ही यह पता चला कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया है। 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर के बाद मन में थोड़ी आशंका तो बनी थी लेकिन अपने देश के नेतृत्व व सैन्य क्षमता की अद्‌भुत शक्ति पर पूर्ण विश्वास था। इसलिए सकारात्मकता के साथ हम चार मातृशक्तियों ने 8 मई को जाने का निर्णय लिया जो पहले से निर्धारित था। लेकिन मन में अजीब सी अशांति थी ।

22 अप्रैल 2025 एक ऐसी तारीख जिसे भारत कभी भुला नहीं सकता। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने दिन दहाड़े निर्दोष पर्यटकों को उनके परिवार और बच्चों के सामने मौत के घाट उतार दिया। यह न केवल एक आतंकी हमला था बल्कि मानवता और सभ्यता पर किया गया खुला प्रहार था। यह सबसे हृदय विदारक और अमानवीय था जहां धर्म के आधार पर केवल हिंदू पुरुषों को ही उनके परिवार और बच्चों के सामने गोली मार दी और महिलाओं से कहा जाकर “मोदी से कह दो”। यह केवल एक आतंकी हमला नहीं था यह एक सुनियोजित नरसंहार था जिसमें न केवल निर्दोष लोगों की हत्या की बल्कि भारत की राष्ट्रीय अस्मिता और धार्मिक सहिष्णुता पर सीधा प्रहार किया। ऐसी स्थिति को भारत ने न केवल सुरक्षा का मामला समझा बल्कि राष्ट्रीय सम्मान और मानवता के विरुद्ध अपराध माना और यही कारण है कि ऑपरेशन सिंदूर केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी बल्कि यह क्रूरता का दंड था, उन चीखों का जवाब था। परंतु अफसोस की जब पूरी दुनिया को यह तय करना था कि क्या वे मानवता के साथ खड़े हैं या आतंक के साथ तो ऐसे समय में तुर्की और अजरबैजान जैसे देशों ने मानवता का साथ नहीं दिया और पाकिस्तान को पूर्णतः अपना समर्थन दिया। अजरबैजान जिसने वर्षों तक अर्मेनिया के साथ संघर्ष में वैश्विक समर्थन और संवेदना की अपेक्षा की आज उस पीड़ा को कैसे नजरअंदाज कर सकता है जिसे भारत ने सहा? कैसे एक देश जो स्वयं संघर्ष और दर्द को समझता है उस आतंक की चुपचाप सराहना कर सकता है? अजरबैजान ने वर्षों तक अर्मेनिया के साथ नागोर्नो काराबाख को लेकर संघर्ष पीड़ा झेली है उसे आतंक और हिंसा में उपजे दर्द का गहरा अनुभव है।

देर रात्रि एयरपोर्ट पर हमें अपने गाइड एलेक्स से मिलना हुआ। उसने भी भारत पाकिस्तान के बीच युद्ध की बात कही और यह भी कहा कि मैं व्यक्तिगत रूप से आतंकवाद का समर्थन नहीं करता हूं हालांकि हमारे देश ने पाकिस्तान का समर्थन किया है क्योंकि पाकिस्तान से हमारे पुराने व्यापारिक संबंध भी हैं। उसकी इन बातों ने मन में असहजता पैदा कर दी थी। देर रात्रि को होटल पहुंच कर न्यूज से भारत की स्थिति का पता चला। उस रात हम सो नहीं सके। हर क्षण यही सोचते रहे कि अगली सुबह क्या होगा। हमें पूरा विश्वास था कि हमारी सेना, वायुसेना नौसेना और बीएसएफ पाकिस्तान को करारा जवाब देंगे। वॉट्सऐप और सोशल मीडिया पर इतनी तेजी से अपडेट आते थे कि ऐसा लगता है कि बॉर्डर पर यही लोग बैठे हैं।

अगली सुबह नौ मई को जब हम नाश्ते के लिए गए तो पूरा होटल भारतीय पर्यटकों से भरा हुआ था वह दृश्य बहुत ही सुकून देने वाला था। उस क्षण एहसास हुआ कि सभी हमारे साथ हैं। हमारे ग्रुप में सभी भारतीय थे जिनके चेहरे शांत परंतु मन में एक अजीब सा तूफान था। यह असहजता ऐसे देश में आने की भी थी जो हमारे दुश्मन का दोस्त था। हमें कुछ स्पॉट दिखाने के बाद दोपहर के खाने के लिए रेस्टोरेंट में ले गए वहां पुराने हिंदी बॉलीवुड के गाने और भारतीय भोजन को देखकर लगा कि प्रत्यक्ष रूप से अजरबैजान की अर्थव्यवस्था को हम कितना लाभ पहुंचाते हैं। 2023 में ही 1.2 लाख से ज्यादा भारतीय पर्यटकों ने अजरबैजान की यात्रा की थी और 2024 में यह संख्या 2,43,589 तक पहुंच गई। इसे मैंने वहां महसूस भी किया। शादाग में जितने भी पर्यटक थे उसमें 90 प्रतिशत भारतीय थे हालांकि उस विषम परिस्थिति में हमें कोई परेशानी नहीं हुई लेकिन इतना तो तय था कि भारत सिर्फ एक देश नहीं एक भाव है और भारतीय जनमानस भावनात्मक रूप से गहराई से जुड़ा होता है, विनम्रता और सहनशीलता उनकी रगों में बसता है लेकिन जब बात स्वाभिमान की हो और अपनों की हो तो वह एकजुट होकर मुंह तोड़ जवाब देता है। आज भारतीय पर्यटकों व ट्रैवल एजेंसियों ने अजरबैजान और तुर्की का सामूहिक बहिष्कार किया। हमने जरूर वहां चार दिन बिताएं लेकिन भावनाओं के बोझ के साथ। वहां जितने भी भारतीय पर्यटक मिले सभी ने यही बात कही कि यदि कुछ ऐसा पहले होता तो हम नहीं आते क्योंकि सभी का कार्यक्रम बहुत पहले से निर्धारित हो गया था।

इन चार दिनों में हर एक पल एक अलग अनुभव था। कभी रोमांच, कभी चिंता, कभी उम्मीद, और कभी भीतर ही भीतर चल रहा भावनाओं का संघर्ष। और फिर... उस क्षण जब हमें यह सूचना मिली कि भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्षविराम की घोषणा हो चुकी है। वह पल राहत देने वाला था।

हम सबने महसूस किया कि युद्ध कभी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता, लेकिन जब अन्याय और आतंक सिर उठाए, तब जवाब देना भी जरूरी हो जाता है। भारत ने जवाब दिया। तेज, सटीक और निर्णायक। जब हम वापस आए तो ऐसा लगा की हमने कोई परीक्षा सौ प्रतिशत अंकों से पास कर ली। जैसे देश छोड़ते वक्त कुछ अनकहा सा मन में था। एक असमंजस, एक बेचैनी थी। वहीं लौटते वक्त भीतर गर्व का भाव था अपने वीर सैनिकों के अदम्य साहस पर ।

डॉ. प्रियंका सिंह

भक्ति और समरसता का संगम : पुरी धाम की रथ यात्रा

काजल सिंह
स्वतंत्र टिप्पणीकार

भारत, एक ऐसा देश है जिसकी संस्कृति और परंपरा विश्व प्रसिद्ध है। भारतीय संस्कृति की जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं और यह हमारे गौरवमयी इतिहास, धर्म, कला, संगीत, साहित्य और संस्कारों में बसी हुई है। भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति एकात्म भाव से पोषित है जहां परंपराओं को बड़े उत्साह और हर्ष के साथ मनाया जाता है। ऐसा ही एक उत्सव है पुरी की "श्री जगन्नाथजी की यात्रा" जो भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा को समर्पित होती है। यह यात्रा विशेष रूप से उड़ीसा के पुरी शहर में बहुत ही भव्य रूप से निकाली जाती है। यह मात्र एक धार्मिक उत्सव नहीं बल्कि आस्था, भक्ति और एकता का संगम है।

भगवान जगन्नाथ, भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के ही एक रूप हैं। उड़ीसा में इन्हें विशेष रूप से पूजा जाता है। 'जगन्नाथ' शब्द का अर्थ होता है- 'जगत के नाथ' अर्थात् पूरे संसार के स्वामी। इनके साथ उनके बड़े भाई बलभद्र और छोटी बहन सुभद्रा की भी पूजा की जाती है। पुरी में स्थित प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर इन तीनों भाई-बहन को समर्पित है। यह मंदिर भारत के चार धामों में से एक है। मान्यता है कि यहां भगवान जगन्नाथ स्वयं विराजमान हैं।

रथ यात्रा की शुरुआत कब और कैसे होती है? पुरी में प्रतिवर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को जगन्नाथ रथ यात्रा निकाली जाती है। इस दिन भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा विशाल रथों पर बैठकर अपने मौसी के घर गुंडिचा मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं। यह यात्रा पूरे 9 दिनों तक चलती है।

यात्रा के आरंभ से पहले भगवानों की मूर्तियों को स्नान कराया जाता है जिसे स्नान पूर्णिमा कहा जाता है। इसके बाद मूर्तियां कुछ दिनों तक विश्राम करती हैं। भगवान का यह रथ 3 किलोमीटर लंबी यात्रा करता है और गुंडिचा मंदिर पहुँचता है, जहाँ भगवान 7 दिन तक विश्राम करते हैं। इस दौरान उन्हें विशेष

भोग अर्पित किए जाते हैं। यह मंदिर भगवान की मौसी का घर माना जाता है। 8वें दिन भगवान की वापसी यात्रा होती है जिसे बहुड़ा यात्रा कहा जाता है। वापसी के दौरान भगवान एक दिन के लिए मौसी के घर के रास्ते पर स्थित माऊसी मंदिर में रुकते हैं और वहां उन्हें एक विशेष मिठाई अर्पित की जाती है, जिसे पोड़ा पीठा कहते है

रथ यात्रा का धार्मिक महत्व : रथ यात्रा मात्र एक शोभा यात्रा नहीं है, बल्कि यह भक्ति, प्रेम और समर्पण से पूर्ण भारतीय संस्कृति की एक गहन झलक है। यह यात्रा दर्शाती है कि भगवान अपने भक्तों के प्रति कितने करुणामय और सुलभ हैं। रथ यात्रा के पावन अवसर पर भगवान स्वयं अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ रथ पर विराजमान होकर नगर भ्रमण करते हैं, जिससे हर वर्ग, धर्म और जाति के श्रद्धालु उनके दर्शन कर सकते हैं। रथ को भक्तगण अपने हाथों से खींचते हैं, जो यह दर्शाता है कि भगवान को पाने के लिए प्रेम और समर्पण ही सबसे बड़ा माध्यम है। रथ यात्रा एक आध्यात्मिक यात्रा भी है, जो आत्मा की परमात्मा की ओर गति का संकेत देती है। इसके माध्यम से सामाजिक एकता, विश्वबंधुत्व और मानवता का संदेश भी दिया जाता है। इसलिए रथ यात्रा न केवल धार्मिक दृष्टि से, अपितु सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह यात्रा दुनिया का सबसे बड़ा रथ उत्सव है। इसमें लाखों भक्त सम्मिलित होते हैं। प्रतिवर्ष तीन विशाल रथों को केवल लकड़ी से बनाना एक बड़ी कला है, जो सदियों से चली आ रही है। यह पर्व भारत के दर्शन को दर्शाता है जिसमें सभी को साथ लेकर चलने का संदेश है।

इसमें जाति, धर्म, रंग, भाषा का कोई भेदभाव नहीं होता। हर कोई भगवान के रथ को खींच सकता है, हर कोई भगवान को देख सकता है। श्री जगन्नाथ यात्रा भारतीय संस्कृति का एक अद्भुत पर्व है। यह न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज में प्रेम, समानता और एकता का भी संदेश देता है। जब लाखों श्रद्धालु एक साथ "जय जगन्नाथ" का जयघोष करते हैं, तो वह मात्र एक नारा नहीं होता, बल्कि वह भगवान और भक्त के बीच के अटूट संबंध का प्रमाण होता है। हमें ऐसे पर्वों के पीछे छुपे संदेश को भी अपनाना चाहिए जहां भगवान स्वयं अपने रथ से उतरकर हमारे बीच आते हैं, हमें साथ लेकर चलते हैं और यह दिखाते हैं कि सच्चा धर्म वही है जो सबको एक साथ लेकर चले। भारतीय संस्कृति के यही पर्व और उत्सव इसे जीवंत बनाते हैं।

जय जगन्नाथ! ■

गर्मियों में होने वाली बीमारियों से बचाव एवं उपचार

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने गर्मियों में इस बार सामान्य से आधिक तापमान तथा सामान्य से आधिक हीट वेव वाले दिनों की भविष्यवाणी की है। ऐसे में हीट-स्ट्रोक, डायरिया, फूड पॉइजनिंग, जलन, सुस्ती, टाइफाइड और चिकनपॉक्स जैसी बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। साथ ही ज्यादा गर्मियों में कई बार मानसिक व शारीरिक संतुलन भी बिगड़ जाता है। इन विषयों के बारे में राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ग्रेटर नोएडा के निदेशक डॉक्टर (ब्रिगेडियर) राकेश गुप्ता से प्रेरणा विचार पत्रिका के संपादक डॉ. मनमोहन सिंह शिशोदिया ने बातचीत की। लगभग सात वर्षों से गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के समीप स्थित यह संस्थान वर्ष 2016 में अपनी स्थापना से लगातार पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ग्रामीण तथा शहरी जनसंख्या को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करा रहा है। एक दशक से भी कम समय में संस्थान ने चिकित्सा सेवा, चिकित्सा शिक्षा तथा चिकित्सा अनुसंधान के क्षेत्र में स्वयं को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में स्थापित किया है। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश-

तापमान बढ़ने और मौसम में अप्रत्याशित बदलाव से स्वास्थ्य संबंधी कौन से प्रमुख खतरे हो सकते हैं ?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : गर्मी के मौसम में हीट स्ट्रोक, हीट एग्जॉशन, निर्जलीकरण (पानी, विद्युत अपघट्य आदि की कमी) और इनके परिणाम स्वरूप होने वाले उल्टी और दस्त के खतरे बढ़ जाते हैं।

नोएडा-दिल्ली क्षेत्र में पारा लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में हीट स्ट्रोक एवं लू से बचाव एवं उपचार कैसे करें?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : हीट स्ट्रोक की स्थिति में बेचैनी तथा ब्रेन हेमरेज (मस्तिष्क रक्तस्राव) हो सकते हैं। ऐसे में शरीर के तापमान को तुरंत कम करना चाहिए। इसके लिए व्यक्ति को नहलाना तथा बर्फ की थैलियों का प्रयोग करना चाहिए। पानी, प्याज, नीबू, चीनी-नमक के घोल, मौखिक पुनर्जलीकरण समाधान (ORS) का पर्याप्त प्रयोग करें तथा ज्यादा व्यायाम आदि न करें।

इस मौसम में लोग ज्यादा चिढ़चिढ़े और तनाव में रहते हैं, इससे कैसे बचें?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : यह समस्या बच्चों और बुजुर्गों में ज्यादा होती है। लगातार पानी, चीनी-नमक का घोल/शिकंजी आदि पीते रहने तथा अकेले ग्लूकोज का प्रयोग न करने से इसमें मदद मिलेगी।

फूड पॉइजनिंग गर्मियों में एक आम बीमारी है। इससे बचने के लिए क्या सावधानी बरती जाएं?

डॉ. (ब्रि.) राकेश गुप्ता, निदेशक, राजकीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ग्रेटर नोएडा (उ. प्र.)

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : पानी को उबालकर या फिल्टर करके पिएं, खाना पकाने से पहले और बाद में, और खाने से पहले अपने हाथ अच्छी तरह धोएं, ताजा खाना ही खाएं एवं सब्जियों को धो कर ही प्रयोग करें। साथ ही हाथ और खांसी स्वच्छता (Hand and Cough Hygiene) पर विशेष ध्यान दें।

गर्मी में मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोगियों के जोखिम को कैसे कम किया जा सकता है?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : ये मुख्यतः जीवन शैली जनित रोग हैं। अतः दिनचर्या को व्यवस्थित तथा खानपान एवं व्यायाम आदि को संतुलित रखें।

परीक्षा के समय छात्रों में तनाव या डिप्रेशन के कौन-कौन से लक्षण दिख सकते हैं?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : कुछ प्रमुख लक्षण हैं एकाकी होना, आपस में न मिलना-जुलना, दोस्त आदि न बनाना तथा माता-पिता से संपर्क कम करना।

परीक्षा अथवा प्रवेश में मनचाहा परिणाम न आने की स्थिति में आने वाले नकारात्मक विचारों पर छात्र कैसे नियंत्रण कर सकते हैं?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : बातचीत ही इसकी कुंजी है। माता पिता का साथ और सहयोग तथा उसे लगातार प्रेरित रखना आवश्यक है।

तनाव कम करने के लिए कौन-कौन सी तकनीकें या उपाय सबसे ज्यादा कारगर हैं?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : योग, ध्यान अथवा व्यायाम करने, प्रकृति तथा दोस्तों/परिवार के साथ समय बिताने तथा पर्याप्त नींद लेना।

प्रेरणा विचार पत्रिका केपाठकों को आपकी ओर से स्वास्थ्य संबंधी अन्य कोई सुझाव?

डॉ (ब्रि.) राकेश गुप्ता : स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, स्वास्थ्य में निवेश करें, जीवन में निवेश करें, नियमित रूप से स्वास्थ्य की जांच करवाएं, कम से कम 45 मिनट प्रतिदिन टहलें, अधिक से अधिक दोस्त बनाएं, घूमें, फिरें और समाज में सकरात्मकता के वाहक बनें। ■

चार धाम यात्रा 2025

चार धाम यात्रा, हिंदू धर्म की सबसे पवित्र और प्रतिष्ठित तीर्थ यात्राओं में से एक है। यह यात्रा उत्तराखंड की हिमालयी वादियों में स्थित चार प्रमुख मंदिरों- यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ के दर्शन के लिए की जाती है। सनातन मान्यताओं के अनुसार, चारधाम यात्रा का उद्देश्य आत्मशुद्धि, पापों से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु देश-विदेश से इस यात्रा में भाग लेते हैं।

चार धाम यात्रा २०२५ की शुरुआत और तिथियां : चारधाम यात्रा 2025 की शुरुआत 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर हुई। इस दिन गंगोत्री और यमुनोत्री के कपाट वैदिक मंत्रोच्चार के साथ खोले गए। इसके बाद 2 मई को केदारनाथ धाम के कपाट खुले, और 4 मई 2025 को प्रातः 6 बजे श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोले गए।

चार धाम यात्रा का धार्मिक महत्व : चारधाम यात्रा का उल्लेख पुराणों और हिंदू धर्मग्रंथों में मिलता है। यह यात्रा जीवन के चार प्रमुख आश्रमों-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-की प्राप्ति का प्रतीक मानी जाती है। मान्यता है कि चारधाम की यात्रा करने से व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। आदिगुरु शंकराचार्य ने लगभग 1200 वर्ष पूर्व इस यात्रा की परंपरा शुरू की थी।

चार धामों का संक्षिप्त परिचय

यमुनोत्री : यहाँ माता यमुना का मंदिर है। यह यात्रा का पहला पड़ाव है।

गंगोत्री : यहाँ माता गंगा की पूजा होती है। यह गंगा नदी का उद्‍गम स्थल माना जाता है।

केदारनाथ : भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, केदारनाथ हिमालय की गोद में स्थित है।

बद्रीनाथ : भगवान विष्णु को समर्पित यह धाम, चारधाम यात्रा का अंतिम और सबसे प्रमुख पड़ाव है।

4 मई 2025 : बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने का विशेष महत्व : 4 मई 2025 को सुबह 6 बजे श्री बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही चारधाम यात्रा के सभी प्रमुख धाम श्रद्धालुओं के लिए पूर्ण रूप से खुल गए। बद्रीनाथ धाम का कपाट खुलना एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान और उत्सव के रूप में मनाया जाता है। कपाट खुलने के समय वहाँ हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहते हैं और मंदिर प्रांगण में भव्य पूजा-अर्चना होती है।

शुभ मुहूर्त : बद्रीनाथ धाम के कपाट खोलने का शुभ मुहूर्त हर वर्ष बसंत पंचमी के दिन घोषित किया जाता है। 2025 में यह तिथि 4 मई को तय हुई थी। कपाट खुलने के समय विशेष पूजा, वैदिक मंत्रोच्चार, और परंपरागत रीति-रिवाजों का पालन किया गया।

यात्रा की तैयारी और पंजीकरण: चारधाम यात्रा में हर वर्ष लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं, इसलिए उत्तराखंड सरकार द्वारा सुरक्षा, स्वास्थ्य और व्यवस्थाओं के लिए विशेष इंतजाम किए जाते हैं। 2025 में यात्रा के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार के पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। हरिद्वार, ऋषिकेश, और अन्य प्रमुख स्थानों पर पंजीकरण केंद्र स्थापित किए गए हैं। यात्रा के लिए पंजीकरण ऑनलाइन या ऑफलाइन दोनों तरह से कर सकते हैं।

ऑनलाइन पंजीकरण : उत्तराखंड पर्यटन विभाग की वेबसाइट या मोबाइल ऐप के माध्यम से किया जा सकता है।

ऑफलाइन पंजीकरण : हरिद्वार, ऋषिकेश, और अन्य प्रमुख पड़ावों पर 20 से अधिक काउंटर स्थापित किए गए हैं।

पंजीकरण के लिए पहचान पत्र, स्वास्थ्य प्रमाण पत्र, और यात्रा की तिथि अनिवार्य है।

यात्रा मार्ग और परिवहन : चारधाम यात्रा का मार्ग कठिन और रोमांचक है। यात्रा आमतौर पर हरिद्वार या ऋषिकेश से शुरू होती है। यहाँ से श्रद्धालु क्रमशः यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की ओर बढ़ते हैं।

प्रमुख मार्ग

♦ हरिद्वार/ऋषिकेश→यमुनोत्री (जन्मनोट्री, हनुमान चट्टी, जानकी चट्टी)

♦ यमुनोत्री→ गंगोत्री (उत्तरकाशी, हर्षिल, गंगोत्री)

♦ गंगोत्री → केदारनाथ (गुप्तकाशी, सोनप्रयाग, गौरीकुंड, केदारनाथ)

♦ केदारनाथ → बद्रीनाथ (जोशीमठ, बद्रीनाथ)

यात्रा के साधन

♦ **सड़क मार्ग :** बस, टैक्सी, और जीप

♦ **ट्रैकिंग :** केदारनाथ और यमुनोत्री के लिए ट्रैकिंग आवश्यक है

♦ **हेलीकॉप्टर सेवा:** केदारनाथ के लिए उपलब्ध

सुरक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ :

उत्तराखंड सरकार और स्थानीय प्रशासन द्वारा यात्रा मार्ग में सुरक्षा, स्वास्थ्य और राहत केंद्र स्थापित किए गए हैं। हर पड़ाव पर प्राथमिक चिकित्सा, आपातकालीन सेवाएँ, और विश्राम गृह उपलब्ध हैं।

♦ यात्रा के दौरान मौसम की अनिश्चितता, भूस्खलन, और ऊँचाई के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं।

♦ श्रद्धालुओं को यात्रा से पूर्व स्वास्थ्य जाँच कराने और आवश्यक दवाइयाँ साथ रखने की सलाह दी जाती है।

यात्रा के नियम और सावधानियाँ :

♦ पंजीकरण के बिना यात्रा की अनुमति नहीं है।

♦ पर्यावरण संरक्षण के लिए प्लास्टिक का उपयोग प्रतिबंधित है।

♦ यात्रा मार्ग में सफाई, अनुशासन और स्थानीय नियमों का पालन अनिवार्य है।

♦ मौसम की जानकारी और प्रशासन के निर्देशों का पालन आवश्यक है।

चारधाम यात्रा का सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव : चारधाम यात्रा न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यात्रा के दौरान स्थानीय संस्कृति, रीति-रिवाज, और पर्व-त्योहारों का अनुभव मिलता है। यात्रा से उत्तराखंड राज्य की अर्थव्यवस्था को भी बड़ा सहारा मिलता है, क्योंकि स्थानीय लोग तीर्थयात्रियों के लिए होटल, भोजन, परिवहन, और गाइड जैसी सेवाएँ प्रदान करते हैं।

यात्रा का समापन और कपाट बंद होने की तिथि : चारधाम यात्रा लगभग 6 महीने चलती है और अक्टूबर-नवंबर में कपाट बंद होने के साथ समाप्त होती है।

चारधाम यात्रा न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता और भारतीय आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम भी है। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन श्रद्धा, संयम और प्रशासनिक व्यवस्थाओं के सहयोग से यह यात्रा जीवन का अविस्मरणीय अनुभव बन जाती है।

कैलाश मानसरोवर यात्रा 2025

यात्रा की तिथि और पुनः आरंभ : कैलाश मानसरोवर यात्रा 2025 की शुरुआत 30 जून से होगी। यह यात्रा पांच वर्षों के अंतराल के बाद फिर से शुरू की जा रही है, जिसकी पुष्टि भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा की गई है। चीन सरकार ने भी भारतीय श्रद्धालुओं के लिए यात्रा खोलने पर सहमति जताई है, जिससे इस बार बड़ी संख्या में यात्री भाग लेंगे।

यात्रा की समय-सारणी और बैच : 2025 में यात्रा के लिए कई बैच निर्धारित किए गए हैं। यात्रा अप्रैल से अक्टूबर तक चलेगी, जिसमें मई, जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर में विशेष तिथियों पर यात्रा प्रारंभ होगी। पूर्णिमा (फुल मून) के समय यात्रा के विशेष बैच भी उपलब्ध हैं, जब श्रद्धालु मानसरोवर झील में पवित्र स्नान कर सकते हैं।

यात्रा के प्रमुख मार्ग : कैलाश मानसरोवर यात्रा मुख्यतः तीन मार्गों से होती है-

♦ **नेपाल मार्ग:** काठमांडू से बस/हेलीकॉप्टर द्वारा। यह सबसे लोकप्रिय और सुविधाजनक मार्ग है, जिसमें काठमांडू, नेपालगंज, सिमिकोट, हिलसा होते हुए मानसरोवर पहुँचा जाता है।

♦ **लिपुलेख दर्रा (उत्तराखंड):** भारत-चीन सीमा का यह पारंपरिक मार्ग है, जो पिथौरागढ़ जिले से शुरू होता है। भारत सरकार और उत्तराखंड प्रशासन द्वारा इस मार्ग का संचालन किया जाता है।

♦ **नाथू ला दर्रा (सिक्किम):** यह मार्ग भी विकल्प के रूप में उपलब्ध है, हालाँकि 2025 के लिए मुख्य फोकस नेपाल और लिपुलेख मार्ग पर है।

यात्रा की अवधि और लागत

समय: यात्रा की कुल अवधि 12–14 दिन (मार्ग के अनुसार) होती है।

लागत : हेलीकॉप्टर मार्ग से यात्रा की लागत लगभग ₹2,65,000 प्रति व्यक्ति है, जिसमें होटल, भोजन, ट्रांसपोर्ट, ऑक्सीजन सिलेंडर, और गाइड शामिल हैं।

पंजीकरण प्रक्रिया

ऑनलाइन पंजीकरण : विदेश मंत्रालय और अधिकृत ट्रैवल एजेंसियों की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

दस्तावेज : पासपोर्ट, स्वास्थ्य प्रमाणपत्र, और अन्य आवश्यक दस्तावेज अनिवार्य हैं।

सावधानी : फर्जी वेबसाइटों और एजेंटों से बचकर अधिकृत स्रोतों से ही पंजीकरण कराना चाहिए।

यात्रा की मुख्य विशेषताएँ

पवित्र स्थल : कैलाश पर्वत (भगवान शिव का निवास) और मानसरोवर झील (पवित्र स्नान के लिए प्रसिद्ध)।

परिक्रमा : कैलाश पर्वत की 52 किमी परिक्रमा (कोरला) अत्यंत पुण्यकारी मानी जाती है।

प्राकृतिक सौंदर्य : हिमालयी पर्वत, तिब्बती संस्कृति, और शुद्ध वातावरण।

पूर्णिमा स्नान : पूर्णिमा के समय मानसरोवर झील में स्नान का विशेष महत्व है।

स्वास्थ्य और सुरक्षा : ऊँचाई और मौसम की कठिनाइयों के कारण स्वास्थ्य जाँच जरूरी है।

♦ यात्रा में आक्सीजन सिलेंडर, प्राथमिक चिकित्सा, और आपातकालीन सेवाएं उपलब्ध रहती हैं।

♦ प्रशासन द्वारा यात्रा मार्ग पर सुरक्षा और सहायता केंद्र स्थापित किए जाते हैं।

कैलाश मानसरोवर यात्रा 2025 आध्यात्मिक आस्था, साहस और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत संगम है। पांच वर्षों बाद यात्रा के पुनः आरंभ होने से श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह है। इच्छुक यात्री समय रहते पंजीकरण कर लें, स्वास्थ्य की पूरी तैयारी रखें और अधिकृत मार्गदर्शन का पालन करें, ताकि यह यात्रा जीवन का अविस्मरणीय अनुभव बन सके।

पद्म पुरस्कार - 2025

पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक है, जिसकी घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर की जाती है। इन्हें मार्च-अप्रैल माह में दिया जाता है। पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिए जाते हैं- पद्म विभूषण (असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए), पद्म भूषण (उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए) और पद्म श्री (विशिष्ट सेवा के लिए)।

प्रत्येक राष्ट्र के नागरिक उसके अंगभूत घटक हैं। राष्ट्र की सभ्यता, धर्म-संस्कृति के संवाहक, संरक्षक और संवर्धक होने का दायित्व इसके नागरिकों पर ही होता है। जिस देश के नागरिक इस विषय में जितने अधिक सजग होते हैं वह राष्ट्र उतना ही उन्नत और प्रगतिशील होता है। एक राष्ट्र के रूप में हम भारत को राष्ट्रदेव और चैतन्य शक्ति के रूप में माँ भारती पुकारते हैं। भारत तत्व इस भूमि के कण-कण में स्पंदित होता है। इन स्पंदनों को आत्मसात कर उसे गति देने के लिए सेवारत कर्मयोगियों को पद्म पुरुस्कारों से सम्मानित किया जाता है।

पद्म पुरस्कार प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिवर्ष गठित 'पद्म पुरस्कार समिति की सिफारिशों पर प्रदान किए जाते हैं। इनकी स्थापना 1954 में हुई थी। यह पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में दिए जाते हैं जिनमें से मुख्य हैं - कला, संगीत, चित्रकारी, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, सिनेमा, रंगमंच आदि, सामाजिक कार्य - सामाजिक सेवा, धर्मार्थ सेवा, सामुदायिक परियोजनाओं में योगदान आदि, सार्वजनिक मामले- कानून, सार्वजनिक जीवन, राजनीति आदि, विज्ञान और इंजीनियरिंग- अंतरिक्ष इंजीनियरिंग, परमाणु विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक अनुसंधान आदि, व्यापार और उद्योग- बैंकिंग, आर्थिक गतिविधियां, प्रबंधन, पर्यटन, व्यवसाय आदि, चिकित्सा - चिकित्सा अनुसंधान, आयुर्वेद, होम्योपैथी, सिद्ध, एलोपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा आदि, साहित्य और शिक्षा - पत्रकारिता, शिक्षण, पुस्तक रचना, साहित्य, कविता, शिक्षा, साक्षरता आदि, सिविल सेवा - सरकारी कर्मचारियों द्वारा प्रशासन आदि में विशिष्टता/उत्कृष्टता आदि और खेल-कूद का क्षेत्र। इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति का प्रचार, मानवाधिकारों की सुरक्षा, वन्य जीवन संरक्षण आदि क्षेत्रों में भी यह पुरस्कार दिए जाते हैं।

अपनी स्थापना काल से ही यह पुरस्कार अपने-अपने क्षेत्र के मूर्धन्य व्यक्तित्वों को दिए जाते रहे हैं जिनमें से अधिकांश अपने कार्य को लेकर पहले ही ख्यातिलब्ध हो चुके होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से पद्म पुरस्कारों के लिए ऐसे व्यक्तियों का चयन किये जाने की परम्परा प्रारंभ हुई है जिनमें समाज के ऐसे नायक और प्रतिभाएं सम्मिलित हैं जो स्वयं बहुत ही साधारण हैं किन्तु उनका कृतित्व और व्यक्तित्व अत्यंत असाधारण है। इस वर्ष भी माँ भारती की सेवा करने वाले अनेक ख्यातिलब्ध व्यक्तियों एवं साथ ही समाज में रहकर चुपचाप चरैवेति-चरैवेति की साधना करने वाले कुल 139 कर्मयोगियों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, जिनमें से 29 मातृशक्ति हैं। इस वर्ष 7 पद्म विभूषण,10 पद्म भूषण और 113 पद्म श्री पुरस्कार दिए गए हैं। सभी का वर्णन इस लेख में कर पाना संभव नहीं है किन्तु सामान्य जानकारी हेतु कुछ पर परिचयात्मक प्रकाश डाला गया है। विदेशी मूल के भारतनिष्ठ व्यक्तियों और प्रवासी भारतवासियों, भारतवंशियों को भी यह पुरस्कार दिया जाता है।

गुजरात की कुमुदिनी रजनीकांत लाखिया को कला क्षेत्र में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है जो कथक नृत्यांगना तथा भारतीय नृत्य और संगीत के संस्थान' कदम्ब स्कूल ऑफ डांस एंड म्यूजिक' की संस्थापक हैं। प्रख्यात लोक गायिका शारदा सिन्हा को कला क्षेत्र में मरणोपरांत पद्म विभूषण सम्मान दिया गया। उन्होंने मैथिली, भोजपुरी के अतिरिक्त हिन्दी गीतों को गाकर अपनी लोक संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन किया था। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड, नेहरू स्मृति संग्रहालय और लाइब्रेरी की कार्यकारी परिषद्, लोकपाल सर्च कमेटी, विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन की सलाहकार परिषद् और इंडिया फाउंडेशन के सदस्य विलक्षण लेखक ए. सूर्य प्रकाश भारतीय संविधान तथा संसदीय मामलों व

शासन पर अग्रणी टीकाकार हैं। अपने कार्यक्षेत्र में निरंतर 48 वर्ष से सक्रिय सूर्य प्रकाश जी को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं भारतीय संस्कृति के प्रणेता बिबेक देबरॉय को मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपने आर्थिक विश्लेषण से देश की आर्थिक नीतियों को सीधे प्रभावित किया। देश के अग्रणी हृदय शल्य चिकित्सकों में से एक डॉ. जोस चाको पेरियापुरम को हृदय चिकित्सा में क्रांति लाने के लिए पद्म भूषण दिया गया। भारत के गौरवमयी इतिहास से सम्बंधित पुरातात्विक शोध हेतु भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण के पूर्व संयुक्त महानिदेशक कैलाश नाथ दीक्षित को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

वरिष्ठ पत्रकार एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय को साहित्य, शिक्षा और पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। सैकड़ों निराश्रित बच्चों की पालनहार, वात्सल्य ग्राम - वृन्दावन की संस्थापिका एवं राम मंदिर आन्दोलन में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करने वाली दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा को उनकी तपस्यापूर्ण समाज सेवा हेतु पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। राजनीतिज्ञ सुशील कुमार मोदी को उनके लोक हितार्थ जनसेवा हेतु मरणोपरांत पदम् भूषण से सम्मानित किया गया। 'पेंटियम चिप के जनक' विनोद धाम को प्रतिष्ठित पद्म श्री से सम्मानित किया गया। एक निम्न मध्यम वर्ग परिवार में जन्में भारत के प्रसिद्ध पार्श्व गायक अरिजीत सिंह को उनकी प्रतिभा हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

त्रिपुरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं अर्थशास्त्री अरुणोदय साहा को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। हिन्दू धर्म- दर्शन पर विशिष्ट कार्य करने वाले मैकगिल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अरविंद शर्मा को पद्म श्री से सम्मानित किया गया। श्रद्धा संस्कृत विद्यापीठ के संस्थापक नाथ संन्यास परंपरा से जुड़े बैजनाथ महाराज को संस्कृत साहित्य, ज्योतिष, वेद और अन्य शास्त्रीय भारतीय ग्रंथों सहित आध्यात्मिकता के क्षेत्र में योगदान हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। मीरासी समुदाय की बेगम बतूल को लोक गीत की मांड भजन शैली में योगदान हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। कबीर, गोरखनाथ, ब्रह्मानंद, मीरा बाई और दादू आदि संतों की विरासत का पिछले 50 सालों से संरक्षण करने वाले मालवा के प्रसिद्ध लोक गायक भैरू सिंह चौहान को पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

आपको जानकार आश्चर्य होगा कि 'पद्म पुरस्कार' किसी उपाधि के समान नहीं है अर्थात् इन्हें पुरस्कार विजेताओं के नाम के प्रत्यय या उपसर्ग के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

भोजपुर में मुसहरों के 'मसीहा' भीम सिंह भवेश ने समाज के सबसे निचले पायदान पर रहने वाले मुसहर समाज की सेवा हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। पिछले 35 वर्षों से निरंतर अपनी सेवा-साधना में रत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संवैचारिक संगठन वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्त्ता चैतराम देवचंद पवार को जनजातीय समाज के उद्धार और पर्यावरण के संरक्षण हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। कश्मीर की पारंपरिक कानी शॉल और पश्मीना बुनाई कला को पूरी दुनिया में पहचान दिलाने वाले फारूक अहमद मीर को पद्मश्री का सम्मान मिला।

अयोध्या के श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा व श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के नव्य-भव्य धाम के लोकार्पण का मुहूर्त निकालने वाले आचार्य गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ को भी भारतीय ज्ञान परम्परा के क्षेत्र में सेवा हेतु पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उत्तर प्रदेश के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के विद्वान हृदय नारायण दीक्षित को शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनके पुस्तकों एवं सैंकड़ों लेखों ने भारत की बौद्धिक विरासत को सहेजने का कार्य किया गया है। निमाड़ी भाषा के संरक्षक, निमाड़ी गद्य के जनक के रूप में प्रसिद्ध, अखिल निमाड़ लोक परिषद् के संस्थापक 76 वर्षीय साहित्यकार जगदीश जोशीला को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

हिन्दू धर्म-दर्शन के अध्येता ब्राजील के मैकेनिकल इंजीनियर जोनास मसेटी 'विश्वनाथ' को भारतीय संस्कृति, वेदांत और प्राचीन ज्ञान के वैश्विक प्रसार और प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु पद्म श्री से सम्मानित किया गया। मेक इन इण्डिया, अन्तरिक्ष अभियान और देश की अत्याधुनिक ऑटोमोटिव क्षमताओं को आगे बढ़ाने में योगदान हेतु महिंद्रा एंड महिंद्रा के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. पवन गोयनका को पद्म श्री से सम्मानित किया गया। लाखों की संख्या में पौधारोपण करने वाली उत्तराखंड की प्रसिद्ध पर्यावरण सेवी एवं सामाजिक कार्यकर्ता 91 वर्षीय राधा बहिन भट्ट को पर्यावरण संरक्षण एवं महिला सशक्तिकरण हेतु पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

अमेरिकी लेखक, शोधकर्ता और वक्ता स्टीफन नैप को भी साहित्य के क्षेत्र में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक विरासत को विदेशी जिज्ञासुओं के बीच अनूठे ढंग से प्रेषित किया है। उनके लेखन, व्याख्यान और मानवता की सेवा ने उन्हें भारतीय संस्कृति के लिए एक महत्वपूर्ण वैश्विक राजदूत बना दिया है।

भारत के राष्ट्रपति के द्वारा पद्म सम्मान देश के उन नायकों को सामने ला रहा है जो भारत को अपने कर्मयोग से गढ़ने में जुटे हैं। नई पीढ़ी को देश के ऐसे कर्मयोगियों से न केवल प्रेरणा मिलती है बल्कि इन कर्मयोगियों से जुड़े हजारों लोगों का उत्साह भी बढ़ता है। ■

जून के उत्सव मानसून का स्वागत भी करवाते हैं!

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

हमारे देश में साल का छठा सबसे गर्म महीना जून है। भारत में मेलों, उत्सवों और महापुरुषों के कारण जून बहुत मुख्य है। इन सभी उत्सवों, व्रत और विशेष दिनों को मनाते हुए, हमें प्रयास करना चाहिए कि सामाजिक चेतना भी आए।

जून के पहले सप्ताह में शिमला समर फैस्टिवल मनाया जाता है। इस प्रसिद्ध त्यौहार में खेलकूद की गतिविधियां, फैशनेबल कपड़ों, हैंडिक्राफ्ट वस्तुओं और व्यंजनों, फूलों की, कुत्तों की प्रदर्शनी लगती है। हवा में कलाबाजियां और लाइव फैशन शो का प्रदर्शन होता है। ज्येष्ठ के महीने में पड़ने वाले सभी मंगल को बड़का मंगल, बड़ा मंगल या बुढ़वा मंगल कहते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश मुख्य रूप से कानपुर, लखनऊ, वाराणसी, उन्नाव, सीतापुर, बाराबंकी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली एवं प्रयागराज जिलों में बुढ़वा मंगल धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन संकटमोचन हनुमान जी तथा बालाजी मंदिर में सुन्दरकांड, हनुमान चालीसा का पाठ कर, चोला चढ़ाया जाता है। हनुमान भक्त जगह जगह भंडारे, लस्सी, ठंडाई एवं प्याऊ की व्यवस्था करते हैं।

गंगा दशहरा का पर्व हर साल ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन राजा भागीरथ के कठोर तपस्या के चलते मां गंगा का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। दशहरा का अर्थ 10 मनोविकारों के विनाश से है। क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी है। हिंदू धर्म में गंगा दशहरा पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता हैं। इस दिन गंगा जी में स्नान करना अपना सौभाग्य समझा जाता हैं। जहां पर जो भी नदी होती है, श्रद्धालू उसकी पूजा अर्चना कर लेते हैं क्योंकि नदियां हमारी संस्कृति की पोशक हैं। 3 जून को गंगा जी में स्नान करके गंगा जी के मंदिर में पूजा और दान करते हैं। 10 दिनों तक मनाये जाने वाले इस उत्सव के समापन के दिन को शुक्ल दशमी कहा जाता है।

दतिया मध्य प्रदेश पीताम्बरा पीठ में एक बोर्ड पर लिखा था सौभाग्यवती महिलाएं माँ धूमावती का दर्शन न करें। धूमावती माँ को शक्तिरुपा देवी के रुप में पूजा जाता है। मैंने देवियों के दर्शन में उन्हें श्रृंगार में और सजी हुई और अति सुन्दर पोशाक में देखा है। पर यह देवी! श्रृंगारविहीन, मैली सी सफेद साड़ी, बिखरे खुले घने बाल और कौवा उनकी सवारी है। ऐसा पूछने पर पता चला कि माता विधवा का रुप है। जिन्हें तंत्र में विश्वास होता है वे देवी धूमावती में विशेष आस्था रखते हैं।

हिंदू धर्म में 24 एकादशियों का बहुत महत्व है। ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी (6 जून) कहते हैं। इसकी कथा में हिंदू धर्म की बहुत बड़ी विशेषता है कि वह सबको धारण ही नहीं करता है, सबके योग्य नियमों की लचीली व्यवस्था भी करता है। महर्षि वेदव्यास ने पाडंवों को एकादशी व्रत का संकल्प कराया तो भीम ने कहा, पितामह इसमें प्रति पक्ष एक दिन के उपवास की बात कही है। पर मैं तो एक समय भी भोजन के बगैर नहीं रह सकता। मेरे पेट में 'वृक' नाम की जो अग्नि है उसे शांत रखने के लिए मुझे कई लोगों के बराबर और कई बार भोजन करना पड़ता है। क्या अपनी उस भूख के कारण मैं एकादशी जैसे पुण्य व्रत से वंचित रह जाऊंगा? यह सुनते ही महर्षि ने भीम का मनोबल बढ़ाते हुए कहा, आप ज्येष्ठ मास की निर्जला नाम की एकादशी का व्रत करो। तुम्हें वर्ष भर की एकादशियों का फल मिलेगा। इस एकादशी पर ठंडे शर्बत की जगह जगह छबीलें लगाई जातीं हैं। जिसे पीकर भीषण गर्मी में राहगीरों को बड़ी राहत मिलती है। स्वयं निर्जल रह कर जरुरतमंद या ब्राहमणों को दान दिया जाता है।

गायत्री जयंती (7 जून) देवी गायत्री को सभी देवताओं की माता समस्त वेदों की देवी होने के कारण देवी गायत्री को वेद माता भी कहा जाता है और सरस्वती, पार्वती और लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। अधिकांश लोग दक्षिण भारत में, श्रावण मास की पूर्णिमा

तिथि को गायत्री जयंती मनाते हैं। वैसे गंगा दशहरा के अगले दिन मनाई जाती है।

पनिहाटी में प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल की त्रयोदशी 9 जून को दही चूड़ा का विशेष भोज होता है। इस 500 साल से चलने वाले 'दंड महोत्सव' का विशेष विधान है। जो 'दही चूड़ा महोत्सव' कहलाता है। पश्चिम बंगाल में कलकत्ता से 10 किमी. दूर पनिहाटी गाँव गंगा तट पर है। सोलहवीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु संकीर्तन का यह प्रमुख केन्द्र बन गया। प्रभु भक्त रघुनाथ दास, प्रभु नित्यानंद के दर्शनों के लिए पानीहाटी गए। जहाँ प्रभु गंगा के तट पर बरगद के नीचे अपने शिष्यों से घिरे बैठे थे। रघुनाथ झिझक के मारे पेड़ के पीछे छिप कर उनके दर्शन कर रहे थे। प्रभु नित्यानंद ने उन्हें देख कर कहा,"रघुनाथ दास! तुम चोर की तरह छिपे हो! और मैंने तुम्हें पकड़ लिया। यहाँ आओ मैं तुम्हें दण्ड दूंगा। और दण्ड स्वरूप बड़ा उत्सव कर"। भक्तों को दहीं चावल परोसने का आदेश दिया। अब चिलचिलाती गर्मी में सेठ ने बड़ी खुशी से उसमें फल मेवे मिलाकर लाजवाब प्रसाद बनाया। इस अद्‌भुत दण्ड की याद में यह उत्सव मनाया जाता है। संकीर्तन के कार्यक्रम के साथ इस महोत्सव का समापन होगा। इस वर्ष यह महोत्सव 9 से 13 जून तक चलेगा। 9 जून को 'दंड महोत्सव' का विशेष विधान है। जो 'दही चूड़ा महोत्सव' कहलाता है।

15वीं शताब्दी के प्रसिद्ध समाज सुधारक, कवि, संत का जन्म ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा (11 जून) को हुआ था। जिसे कबीर प्रकाश दिवस के रुप में मनाया जाता है। कबीर अंधविश्वास और अंधश्रद्धा के प्रथम विद्रोही संत हैं। सागा दावा सिक्किम के सबसे बड़े त्यौहार में से एक है। जो सिक्किम की संस्कृति को प्रस्तुत करता है। माना जाता है कि इस दिन बुद्ध का जन्म हुआ था, उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और निर्वाण प्राप्त किया था।

ओचिरा कलि मंदिर से जुड़ा केरल का एक वार्षिक उत्सव है। केरल के कोल्लम जिले में स्थित है। यह प्राचीन मंदिरों और अनूठी अध्यात्मिक परंपराओं के कारण महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। जो पुराने समय में हुई एक लड़ाई की याद में लोग मनाते हैं। जिसमें दो समूह कायाकुलम और अलाप्पुझा के बीच लड़ाई हुई थी।

ओडिशा में राजा संक्रांति समारोह मानसून के शुरुआत का तीन दिवसीय उत्सव है। इसे स्विंग फेस्टिवल' भी कहते हैं, जगह जगह पेड़ों पर झूले जो पड़ जाते हैं। त्यौहार के दौरान लोग पृथ्वी पर नंगे पांव भी नहीं चलते। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि मानसून की बारिश से पहले पृथ्वी को आराम दिया जाना चाहिए। महिलाएं घर के काम से छुट्टी लेतीं हैं और किसान खेती से। सब खेलों में व्यस्त रहते हैं। लड़कियां पारंपरिक पोशाक पहनतीं हैं और पैरों में आलता लगातीं हैं। दूसरे दिन को "सजबजा'' कहते हैं। इसमें सिलबट्टे को सजा कर रखते हैं। हिंदू देवी धरती के प्रतीक सिल को हल्दी का लेप लगा कर महिलाओं द्वारा स्नान कराया जाता है। धरती मां को फलों का भोग लगाया जाता है। बारिश का स्वागत करने के लिए सब एक साथ आते हैं। समापन 15 जून को, धरती मां के आशीर्वाद स्वरुप अच्छी पैदावार होगा।

हिंदू धर्म में 24 एकादशियों का बहुत महत्व है। ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी (6 जून) कहते हैं। इसकी कथा में हिंदू धर्म की बहुत बड़ी विशेषता है कि वह सबको धारण ही नहीं करता है, सबके योग्य नियमों की लचीली व्यवस्था भी करता है।

आंबुची मेला यह तीन दिन तक चलने वाला मेला गोहाटी में मनाया जाता है। तीन दिन कामाख्या मंदिर बंद रहता है। तीन दिनों बाद, चौथे दिन देवी की प्रतिमा को नहलाया जाता है और भक्त मां के दर्शन के लिए आ सकते हैं। 22 से 26 जून को यह मानसून वार्षिक मेला लगेगा।

जून पूर्णिमा के दिन जम्मू और कश्मीर के लेह में सिंधु दर्शन महोत्सव का तीन दिन 23 से 27 जून तक आयोजन किया है। जिसमें बड़ी संख्या में विदेशी और घरेलू पर्यटक आते हैं। सिंधु दर्शन समारोह के आयोजन का मुख्य कारण सिंधु नदी को भारत के सांप्रदायिक सद्‌भाव और एकता के प्रतीक के रुप में समर्थन करना है। सिंधु दर्शन लेह के मुख्य शहर से 8 किमी. दूर स्थित शीला मनला में मनाया जाता है। यहां लगभग 50 वरिष्ठ लामा प्रार्थनाओं को अनुष्ठान के रुप में करते हैं। देश के विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला भी प्रस्तुत की जाती है।

गोवा में साओ जोआओ 24 जून को मानसून आगमन के साथ ही, इस मानसून उत्सव को खास तौर पर मछुआरा समूह मनाते हैं। नाच गाना और तरह तरह के रंगारंग कार्यक्रमों द्वारा आपस में मनोरंजन करते हैं। ये उत्सव यहां का खास आकर्षण है।

रथयात्रा पुरी का प्रधान पर्व होते हुए भी, रथोत्सव पर्व भारत में लगभग सभी नगरों में श्रद्धा और प्रेम के साथ मनाया जाता है। जो श्रद्धालू पुरी नहीं जा पाते वे अपने शहर की रथ यात्रा में जरुर शामिल होते हैं। आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन भगवान जगन्नाथ की यात्रा प्रारंभ होती है। इस वर्ष 27 जून को है। रथ यात्रा ये एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भक्तों के बीच में आते हैं। भगवान जगन्नाथ की यात्रा में भगवान श्री कृष्ण, माता सुभद्रा और बलराम की पुष्य नक्षत्र में रथ यात्रा निकाली जाती है। रथयात्रा माता सुभद्रा के भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्‌देश्य से श्रीकृष्ण और बलराम ने अलग रथों में बैठ कर करवाई थी। सुभद्रा जी की नगर भ्रमण की याद में यह रथयात्रा पुरी में हर वर्ष होती है।

जून की भीषण गर्मी में हमारे उत्सव हमें यात्रा, संगीत, स्वास्थ और पर्यावरण का महत्व समझाते हुए हमसे मानसून का स्वागत भी करवाते हैं। ■

नेवी सेलर बना राजेश

कुलदीप सरकारी विद्यालय में शिक्षक के पद पर कार्यरत था, उसके दो बच्चे थे अभिषेक और राजेश दोनों बच्चे पढ़ने में बहुत होशियार थे, खेलने-कूदने में भी सबसे आगे रहते थे, अभिषेक क्रिकेट खेलता था, बड़ी जोरदार बल्लेबाजी करता था। लेकिन राजेश की दिलचस्पी दौड़ने में, तैरने में, तथा घुड़सवारी में थी, जब दोनों बालक बड़ी कक्षा में गए तो उन्होंने अपने-अपने हिसाब से विषयों का चयन किया अभिषेक ने साइंस बायोलॉजी ले ली और राजेश ने गणित विषय लिया दोनों ने अपनी 12वीं की परीक्षा अच्छे अंकों में पास कर ली।

राजेश घर पर अपने मम्मी पापा से कहता रहता था, मुझे तो तैरने में बहुत मजा आता है, देखना मैं तो जहाज की नौकरी करूँगा नौ सेना में भर्ती होऊँगा, नौसैनिक बनूंगा, पनडुब्बी में बैठूंगा और समुद्र के रास्ते से जो देश के दुश्मन हमारे भारत पर आक्रमण करेंगे, उनको छोडूँगा नहीं, मार गिरा दूँगा, उनकी पनडुब्बियों को नष्ट कर दूँगा, मुझे बड़ा मजा आएगा जब मैं दुश्मनों को मारूँगा।

देखना अपने देश का नाम ऊँचा कर दूँगा, जब ऐसा कहता था तो उसके पापा उससे कहते थे इन फालतू बातों में क्या रखा है ? इंजीनियर बन जाना मोटी तनखा मिलेगी नाम भी ऊँचा होगा, पर राजेश को तो धुन सवार थी, मैं तो नौ सेना में ही भर्ती होऊँगा, एक दिन अखबार में विज्ञापन पढ़ा मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा हुआ था, नेवी सेलर के पदों की भर्ती, राजेश ने आवेदन कर दिया, परीक्षा की तैयारी की परीक्षा हुई और रिजल्ट आया, राजेश ने परिणाम देखा तो उसने देखा कि वह पास हो गया है, फूला नहीं समाया! दौड़ा-दौड़ा आया अपनी माँ के चरण छुए! पापा के चरण छुए! और कहने लगा नेवी सेलर के पद के लिए मैं लिखित परीक्षा में पास हो गया हूँ, अब मैं नौ सैनिक बनूँगा, मैं नाविक बनूंगा, देश की रक्षा करूँगा, अपने देश का मान ऊँचा रखूँगा। ऐसा कहते हुए बहुत खुश होता है!

बाद में फिजिकल परीक्षा में और मेडिकल परीक्षा में भी राजेश पास हो जाता है, कुछ दिन बाद नौ सेना कार्यालय से ट्रेनिंग के लिए बुलावा आता है। उसके मम्मी पापा जो प्रारंभ

में उदासीन थे, लेकिन जब बेटे की उत्सुकता और उसकी देश भक्ति देखी तो बहुत खुश होते हैं! पूरे मोहल्ले में मिठाइयाँ बाँटते हैं, और कहते हैं हमारे राजेश की साधना पूरी हो गई! वह नौ सेना में नाविक बन गया है !

हम गर्व से कह सकेंगे कि हम एक नौ सैनिक के मम्मी पापा है, हमारा बेटा देश के लिए सीमा पर तैनात है। जब राजेश ट्रेनिंग के लिए रवाना होता है तो पूरा मोहल्ला इकट्ठा होता है, सब उसे मिठाई खिलाते हैं, गले में माला पहनाते, मोहल्ले की बच्चियाँ रोली का तिलक लगाती है, आरती उतारती है और सब परिजन कहते हैं, राजेश बेटे हम सब की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ है।

तुम जाओ नेवी सेलर की ट्रेनिंग पूरी करो ! अपने मम्मी पापा का, मोहल्ले का हमारे गांव, का जिले का और देश का नाम ऊँचा करो।

सब एक साथ बोलते हैं देशभक्त राजेश की जय हो ! राजेश की जय हो!!

देशभक्त पुत्र के देशभक्त पिता कुलदीप की जय हो!! कुलदीप की जय हो!!

भारत माता की जय हो!! राजेश बहुत खुश होता है तथा नेवी सेलर की ट्रेनिंग में चला जाता है उसको अपने जीवन का लक्ष्य पूरा होता हुआ दिखता है। और वह कहता है मैंने मेरी मंजिल को पा लिया है, मैं नाविक बन गया हूं!! नाविक!!!

-विष्णु शर्मा हरिहर कोटा, राजस्थान

नाटो सम्मेलन पर विशेष

नाटो शिखर सम्मेलन 2025 (NATO Summit 2025), 24–26 जून को नीदरलैंड के हेग में आयोजित हो रहा है, जिसमें 32 सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष और सरकार के प्रमुख भाग लेंगे। यह सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है जब वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में कई गंभीर चुनौतियाँ सामने हैं-विशेषकर रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन की बढ़ती भूमिका, साइबर सुरक्षा, और रक्षा खर्च को लेकर सदस्य देशों के बीच सामंजस्य।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य -

♦ **रणनीतिक दिशा तय करना :** नाटो की दीर्घकालिक रणनीति, रक्षा नीति और वैश्विक संकटों के प्रति प्रतिक्रिया पर चर्चा।

♦ **सुरक्षा चुनौतियों का समाधान :** रूस-यूक्रेन युद्ध, चीन की आक्रामकता, साइबर हमले, आतंकवाद, और नई तकनीकों से उत्पन्न खतरों पर विचार।

♦ **रक्षा खर्च :** सदस्य देशों के बीच रक्षा बजट के बोझ का न्यायसंगत बंटवारा और सैन्य क्षमताओं का विस्तार।

♦ **साझेदारी और विस्तार :** नए साझेदारों की तलाश और गठबंधन के विस्तार पर चर्चा, जिसमें हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा भी शामिल है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य-

♦ **रूस-यूक्रेन युद्ध :** नाटो की प्राथमिकता यूक्रेन को समर्थन देना और पूर्वी यूरोप में सामूहिक रक्षा को मजबूत करना है।

♦ **चीन की चुनौती :** नाटो ने अपनी रणनीतिक अवधारणा में चीन को सुरक्षा, हितों और मूल्यों के लिए चुनौती माना है।

♦ **साइबर और अंतरिक्ष :** गठबंधन ने साइबरस्पेस और बाह्य अंतरिक्ष में अपनी क्षमताओं का विस्तार किया है, जिससे भविष्य की युद्ध रणनीतियाँ प्रभावित होंगी।

भारत और नाटो

भारत नाटो का सदस्य नहीं है, परंतु हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की घेराबंदी, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, और सैन्य शिक्षा जैसे क्षेत्रों में दोनों के बीच संपर्क और सहयोग की संभावना बनी हुई है। विशेषज्ञ मानते हैं कि चीन की आक्रामकता के मद्देनजर भारत और नाटो के बीच औपचारिक साझेदारी की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। नाटो सम्मेलन 2025 न केवल यूरोप, बल्कि वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था के लिए निर्णायक साबित हो सकता है। इसमें लिए गए फैसले आने वाले वर्षों में सामूहिक रक्षा, रणनीतिक साझेदारी और तकनीकी श्रेष्ठता के क्षेत्र में नाटो की भूमिका को और अधिक स्पष्ट और प्रभावशाली बनाएंगे।

भारत ने जापान को पछाड़ा, बना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

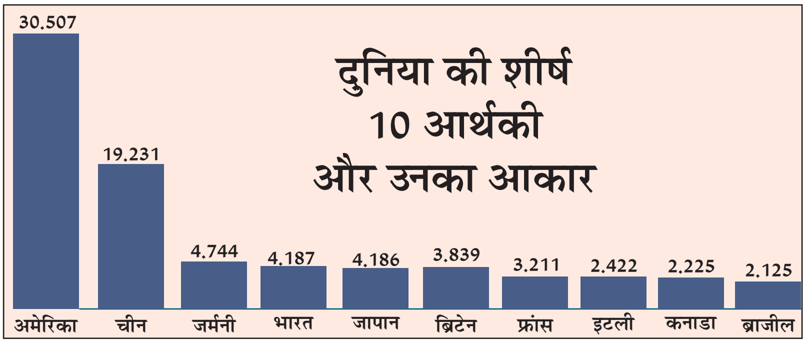

भारत ने वैश्विक आर्थिक मंच पर एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हुए जापान को पीछे छोड़ते हुए विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का गौरव प्राप्त कर लिया है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि हाल ही में नीति आयोग के सी ई ओ बी.वी.आर. सुब्रमण्यम द्वारा साझा की गई, जिसमें उन्होंने भारत की भू राजनीतिक परिदृश्य, आर्थिक मजबूती और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

नीति आयोग ने जानकारी दी कि भारत की कुल अर्थव्यवस्था अब चार ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर चुकी है, जो वैश्विक निवेशकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने कहा, 'वर्तमान समय में भारत का भू-राजनैतिक परिदृश्य और आर्थिक स्थिति दोनों सुदृढ़ हैं। देश की आर्थिक प्रगति निरंतरता की ओर बढ़ रही है।'

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के नवीनतम अनुमानों के अनुसार, भारत की अनुमानित जीडीपी वर्ष 2025 तक 4.187 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है, जो जापान की अनुमानित जीडीपी से अधिक होगी। यह बदलाव वैश्विक आर्थिक संतुलन में भारत की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है।

भारत की डेमोग्राफिक डिविडेंड अर्थात् युवाओं की बड़ी जनसंख्या देश के आर्थिक विकास में निर्णायक भूमिका निभा रही है। इसके विपरीत, जापान को बुजुर्ग होती जनसंख्या और गिरती जन्म दर जैसी गंभीर आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो उसकी विकास गति को प्रभावित कर रही हैं।

निश्चित रूप से संरचनात्मक सुधार, तकनीकी नवाचार और वैश्विक साझेदारी की ओर बढ़ते कदम भारत की विकास यात्रा को और भी तेजी से आगे बढ़ायेंगे।

मोंटे कार्लो में गूंजी भारतीय राष्ट्रगान की ध्वनि

भारतीय मोटरस्पोर्ट्स के लिए अविश्वसनीय क्षण! कुश मैनी ने मोंटे कार्लो में फॉर्मूला 2 रेस जीतकर इतिहास रचा है, वह ऐसा करने वाले पहले भारतीय बने। यह दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित ट्रैक्स में से एक है। यह भारत के लिए वैश्विक रेसिंग का एक ऐतिहासिक पल है जो विश्व स्तर पर भारत को प्रतिस्थापित करता है।

पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

प्रेरणा विचार पत्रिका के जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता जून, जुलाई एवं अगस्त 2025 में समाप्त हो रही है, वे पाठक अपनी सदस्यता के नवीनीकरण हेतु निम्न फार्म को भर कर या नीचे दिए गए QR CODE को स्कैन कर अपनी सदस्यता सुनिश्चित कर सकते हैं। फार्म हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या व्हाट्सऐप नम्बर (9354133754) पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नम्बर 9354133754 पर भी सम्पर्क कर सकते हैं।

नाम.. मोबाइल नं. ....

डाक का पूरा पता...

....

....पिन कोड. ....

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए QR CODE स्कैन करें

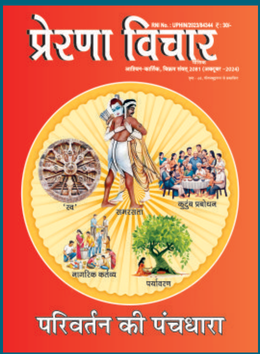

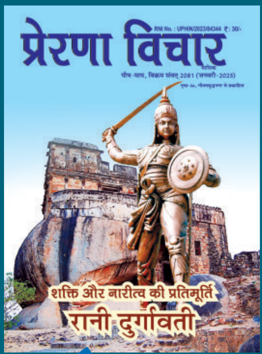

9354133754m@pnb

MERCHANT: PRERNA SHODH SANSTHAN NYAS

ऑनलाइन भुगतान के लिए
लिए स्कैन करें

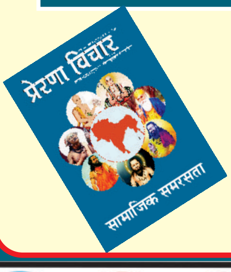

@PRERNAVICHAR   +919354133708

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

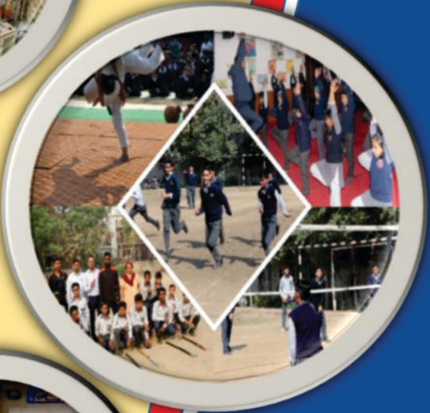

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195